• वर्ष : 01 | • अंक : 08
• पृष्ठ : 48 | • मूल्य : ₹ 30
अक्टूबर, 2021

मेरी निहारिका

एक रिश्ता प्यार का
एक बंधन परिवार का

चलो गरबा घूमें

नवरात्रि विशेष

मेरे राम...!

स्त्री शक्ति!

मेरा पहला करवाचौथ

कलयुग में कैसे आएँगे राम कैसे होगी राम-राज्य की स्थापना?

VISIT…

शक्ति की अराधना और अहंकार पर जीत का प्रतीक...

ये दोनों पर्व एक साथ ही क्यों?

only books magazine

विजया डालमिया
संपादक, मेरी निहारिका

शक्ति का पर्व नवरात्रि और इसके ठीक बाद ही अहंकार पर जीत का प्रतीक विजयदशमी का पर्व एक साथ जुड़े हैं। हम दशहरा क्यों मनाते हैं? स्वाभाविक है एक सीधा-सा उत्तर हर कोई देता है कि उस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने अहंकारी रावण को मार गिराया था। यह पर्व हम इसलिए मनाते हैं। यह सच है, पर इसके पीछे की एक मान्यता यह भी है कि राम रावण के बीच जब युद्ध चल रहा था तो राम की सेना हार रही थी। भगवान राम निराश हो रहे थे। उन्होंने जब ध्यान लगाया तो देखा कि युद्ध में अकेला रावण नहीं उनके साथ शक्ति भी लड़ रही थी। शाम को युद्ध रुकने के बाद जब इस पर चर्चा हुई तो भगवान राम की बात सुनकर जामवंत ने कहा... "प्रभु आप शक्ति की आराधना करें"। भगवान राम ने दूसरे दिन से देवी की अराधना की। वहां भी शक्ति ने उनके पूजा की थाली से एक कमल हटाकर उनकी परीक्षा ली। राम वहां डिगे नहीं। उन्होंने सोचा कि उनकी माँ उन्हें हमेशा कमल नयन कहकर पुकारती थी। अभी उनके पास दो आँखें है। उनमें से एक आँख देवी को चढ़ाकर मैं अपनी पूजा पूरी करूँगा। जैसे ही वह तीर आंख के पास लेकर आँख निकालने ही वाले थे, तभी दुर्गा प्रगट हो गई और उन्होंने राम का हाथ पकड़कर उन्हें जीत का आशीष दिया। परिणामस्वरुप विजयादशमी को युद्ध में रावण मारा गया।

दरअसल यह एक कहानी नहीं संपूर्ण जीवन का सार है। मनुस्मृति में भी लिखा है... 'शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्। न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा। । ' ...यानि जिस कुल में स्त्रियाँ कष्ट भोगती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है और जहाँ स्त्रियाँ प्रसन्न रहती है वह कुल सदैव फलता-फूलता और समृद्ध रहता है। सीता का हरण तो रावण के वध का कारण बना ही। लेकिन अपनी पत्नी मंदोदरी को कष्ट पहुंचाकर रावण ने अपने पूरे वंश का नाश करा दिया। नवरात्रि से लेकर विजयादशमी तक का पर्व सही मायने में शक्ति की आराधना का संदेश है। हम गांव कस्बे से लेकर महानगरों और देश विदेश तक देखें तो वे घर और घराने आज भी फल फूल रहे हैं, जहाँ नारी के आदर सम्मान से ज्यादा उनकी राय को महत्व दिया गया। नारी सरस्वती है जो आपको ज्ञान देती है। नारी लक्ष्मी भी है जो आपको सुख और वैभव देती है। नारी शक्ति भी है जो आपके हर मुसीबत में एक ढाल बनकर खड़ी है। यह एक पर्व नहीं, बल्कि मर्यादा, संस्कार और संस्कृति की सीख का सर्वोत्तम उदाहरण है। आइए हम संकल्प लें कि आज से ही हम इस सीख को हमेशा पर्व के रूप में मनाएंगे।

नवरात्रि और दशहरा की आप सभी को मेरी निहारिका की ओर से ढेरों शुभकामनाएं!!!

नारी शक्ति भी है जो आपके हर मुसीबत में एक ढाल बनकर खड़ी है। यह एक पर्व नहीं, बल्कि मर्यादा, संस्कार और संस्कृति की सीख का सर्वोत्तम उदाहरण है।

• वर्ष : 01 • अंक : 08 • अक्टूबर, 2021

मेरी निहारिका

एक रिश्ता प्यार का
एक बंधन परिवार का

कवि डॉ. विष्णु सक्सेना
संरक्षक

राकेश कुमार शर्मा
प्रबंध संपादक

विजया डालमिया
संपादक

मीनाक्षी मोहन मीता
कार्यकारी संपादक

आभा चौहान
कार्यकारी संपादक

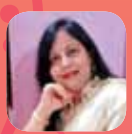

मंजू शर्मा
संयुक्त संपादक

आरती आरजू
संयुक्त संपादक

माधुरी (मैडी)
क्रिएशन

Design By

deesign STUDIO
deesignwork@gmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित लेख एवं रचनाओं से संपादक एवं प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। लेखक/प्रेषक के स्वतंत्र विचार हैं और उसका संपूर्ण दायित्व भी उन्हीं का है। पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजी सामग्री को आंशिक या पूर्ण प्रकाशित करने या न करने का अधिकार संपादक मण्डल/प्रकाशक के पास सुरक्षित है। अप्रकाशित सामग्री प्रेषक के पास वापिस नहीं भेजी जायेगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा।

email : editor@meriniharika.com
abha@meriniharika.com
meeta@meriniharika.com
whatsapp : 9828423123
Website : www.meriniharika.com

संपादकीय एवं बिजनेस ऑफिस
47/77, मानसरोवर, जयपुर (राज.)-302020

अंदर पढ़ें...

"हँसी जीवन का संगीत है।"

04 मेरा पहला करवाचौथ
07 स्त्री शक्ति!
08 हिंदी काव्य मंच और हास्य रस का संगम

11 चलो गरबा घूमें
12 कैसे लौटे पढ़ाई में ध्यान?
13 बुजुर्ग...
14 नवरात्रि विशेष
16 कलयुग में कैसे आएँगे राम कैसे होगी राम-राज्य की स्थापना?

17 मेरे राम...!
18 रावण दहन
19 विदाई की वह शाम...
28 कोलकाता : आमार शोनार बांग्ला
22 कांच के शहर से निकला हीरा
24 समाजवाद के अग्रदूत हैं महाराजा अग्रसेन

26 शरद पूर्णिमा...
27 अपनेपन की महक...
28 ज्वर या बुखार कभी अनदेखा न करें...
29 भारतीय बेटी की पहल 12 घंटे में लगे 1 लाख 31 हजार पौधे
38 चिट्ठी आई है, आई है चिट्ठी आई है...

32 शक्ति स्वरूपा...
33 सुंदर फूलदान
34 चंद्रगुप्त तुम बनो...
35 प्रसन्नवदना...
36 एहसास...
37 कुछ रिश्ते
38 "आदमी"
48 सुनो दुर्गावती...
41 अनुत्तरित प्रश्न
46 बाल कविता

only books magazine

मैं न भूलूँगी

मेरा पहला करवाचौथ

विजया डालमिया
हैदराबाद

only books magazine

वाकई, करवा चौथ अपने आप में ढेर सारी खूबसूरती के साथ प्यार और विश्वास भी ले आता है। सोलह सिंगार के साथ, निराहार रहने के बावजूद एक महिला के चेहरे की चमक किसी चांद से कम नहीं होती।

दो चाँद। दोनों ही तलबगार। एक चांद आसमान पर। एक चांद जमीन पर। दोनों ही बेहद खूबसूरत। और दोनों को ही देखना जरूरी। सच करवा चौथ याने हम शादीशुदा महिलाओं का वैलेंटाइन डे। चांद का महत्व शायरों ने अपनी शायरियों में, कवियों ने कविता में अपने अपने तरीके से बयां किया है। पर करवा चौथ ने चांद को पूज्यनीय बना दिया है। वाकई, करवा चौथ अपने आप में ढेर सारी खूबसूरती के साथ प्यार और विश्वास भी ले आता है। सोलह सिंगार के साथ, निराहार रहने के बावजूद एक महिला के चेहरे की चमक किसी चांद से कम नहीं होती।

मेरी शादी के बाद मेरी पहली करवा चौथ जैसे-जैसे नजदीक आ रही थी, मुझे वह सब सीन जो आज तक मैंने सिर्फ पिक्चर्स में देखे थे याद आ आकर रोमांचित किए जा रहे थे। मुझे नहीं पता था कि चांद की तरह मेरी खुशियों को भी ग्रहण लगने वाला है। चूंकि इनका काम ही कुछ ऐसा था कि इन्हें कई बार अचानक ही आउट ऑफ स्टेशन जाना पड़ता था। तब भी यही हुआ। ये चले गए। मैंने भी सोचा करवाचौथ तक आ ही जाएंगे। मेरे पतिदेव थोड़े भुलक्कड़ भी हैं तो तीज त्योहार उन्हें याद नहीं रहते। मैंने भी जिक्र नहीं किया क्योंकि जब मैंने वापसी का प्रोग्राम पूछा तो उन्होंने कहा..."अभी काम कंप्लीट नहीं हुआ है।" सुनकर मैं बेहद उदास हो गई। मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। करवाचौथ के पहले दिन जब घर में सभी मेहंदी से हाथ रचा रहे थे तो मुझे भी सब ने कहा, पर मैंने..."मेरा मन नहीं है।" कहकर इंकार कर दिया। तब सासुमां ने..." शगुन के नाखून ही लगा ले "... कहा तो मैंने उनका मान रख नाखूनों में मेहंदी लगा ली। करवा चौथ के दिन सुबह से ही मन भारी तथा आंखें रोने पर उतारू हो रखी थी, पर त्योहार की वजह से मैने खुद को कंट्रोल कर रखा था। सब काम एक रोबोट की तरह खामोशी से किए जा रही थी। ना ही श्रृंगार की सज धज। ना ही पायल की छम-छम। सब फीके -फीके। सूने- सूने। हर जगह बस इन्हीं की सूरत। कभी-कभी तो मैं सोचती कि अगर चलनी में से चांद को देखूं तो भी क्या... ये नहीं है फिर भी सूरत तो इन्हीं की नजर आएगी। बस यही सब सोचते हुए मैं रूम में तैयार होने गई। ड्रेसिंग टेबल पर परफ्यूम की बोतल बंद होने के बावजूद इनकी महक का एहसास करा गयी मुझे और तभी मैंने पलट कर देखा तो सामने यह खड़े थे। मैं देखते ही रह गई। कुछ कहती इसके पहले ही इन्होंने कहा..."तुमने तो मुझे बताया नहीं। वह तो कल मैं दीदी के यहां जब पहुंचा तो सारी बहू मेहंदी लगा रही थी। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि कल करवा चौथ है। बस तभी मुझे जो पहली ट्रेन मिली उसी से मैं चला आया।" सच... उस पल मुझे इन पर और इनके प्यार पर बहुत नाज हो आया। मैं इनके सीने से लग कर कुछ कह पाती तभी सासू मां, जेठानी सभी आकर कहने लगे... क्यों? अब तो मेहंदी लगाएगी ना? और शर्माते हुए मैंने.. "हां" कह कर नजरें झुका ली। पीछे से ननद ने चुटकी ली और गुनगुनाने लगी... सजना है मुझे सजना के लिए..। आज भी जब कभी वह पल, वह लम्हा, नजरों के सामने से गुजरता है तो समय के साथ प्यार को और भी गहरा करते चला जाता है।

मेरा पहला करवाचौथ

मंजू शर्मा
भुवनेश्वर, ओडिशा

स्त्रियाँ साल में अनेकों त्योहार अपने पति की लम्बी उम्र, निरोगी काया और प्यार पाने के लिए रखती हैं और भगवान से प्रार्थना करती हैं। लेकिन करवाचौथ का व्रत स्त्रियों लिए बहुत खास होता है ये व्रत पूरे भारत में बहुत प्रचलित है लगभग सभी सुहागिनें इस व्रत को अपने पति की दीर्घायु के लिए रखती हैं।

only books magazine

कुछ यादें, कुछ दिन और कुछ पल हमारी जिंदगी के इतने खास होते हैं कि वो अविस्मरणीय पल बन जाते हैं।

स्त्रियाँ साल में अनेकों त्योहार अपने पति की लम्बी उम्र, निरोगी काया और प्यार पाने के लिए रखती हैं और भगवान से प्रार्थना करती हैं। लेकिन करवाचौथ का व्रत स्त्रियों लिए बहुत खास होता है ये व्रत पूरे भारत में बहुत प्रचलित है लगभग सभी सुहागिनें इस व्रत को अपने पति की दीर्घायु के लिए रखती हैं।

मेरे पहले करवाचौथ का अनुभव कुछ इस तरह से है।

मैं बचपन से ही व्रत करने की बहुत शौकीन रही हूँ। मेरी शादी फरवरी में हो गई थी। और जब करवाचौथ आया तब मेरे साथ एक जीवन ओर सांस ले रहा था इसी वजह से तबियत भी ठीक नहीं रहती थी, कुछ भी खाया नहीं जाता था। सासु माँ ने कहा रहने दे... व्रत अगली बार से शुरू कर लेना। लेकिन मन न माँना और सबके साथ व्रत कर लिया। अब सबको लग रहा कहीं भूखे रहने से इसकी तबियत और न बिगड़ जाए, लेकिन श्रद्दा और विश्वास के साथ सारा दिन अच्छे से निकल गया।

शाम होते ही माँ-पिताजी आँगन में चक्कर लगाने लगे जल्दी से चाँद निकल जाए। मंजू सुबह से भूखी है और मुझे लग रहा... क्यों इतना परेशान हो रहे हैं? कहीं किसी को बुरा नहीं लग जाए।

हम भी तो भूखे हैं।

उस समय नई जिंदगी का नया सफर खुशनुमा अनुभव कराता था। मुझे फिल्मी गाने सुनने का बहुत शौक था। एक गाना उस समय बहुत प्रचलन में था और मुझे बहुत पंसद भी था।

अहसास देखूँ मैं आज की रात
चाँद और पिया दोनों साथ-साथ

उस दिन सुबह से मेरे टेप पर वही गाना बजता रहा।

बड़े भईया के बच्चे सब समझदार थे। वो ये गाना सारे दिन से सुन रहे थे कि चाची के रूम से बज रहा है।

हमारे यहाँ दोपहर में ही पूजा कर ली जाती है।

रात को सिर्फ चाँद को (अर्घय) दिया जाता है।

जब रात को पूजा की तैयारी हुई तो मेरी आँखें पति देव का इंतजार कर रही थी।

हम सब रात को तैयार होकर आँगन में पहुँचे जैसे ही मेरे पति भी घर पहुँच गए। इत्तफ़ाक देख बच्चे एकसाथ बोल पड़े... चाची... चाचा जी आ गए अब दोनों चाँद देखों एकसाथ... इनकी नजरें भी शरम से झुक गई। बच्चे फिर बोल पड़े आज चाची सारे दिन से यही गाना सुन रही थी।

सब जोर से हंस पड़े और मैं तो जैसे पानी-पानी हो गई। मेरी एक नजर गगन के चाँद पर और दूसरी नजर अपनी जिंदगी के चाँद पर थी।

वो दिन और वो गाना आज भी करवाचौथ पर मीठी याद बनकर इस दिन को 27 सालों से और भी खास बना जाता है।

मैं न भूलूँगी

मेरा पहला करवाचौथ

मीनाक्षी मोहन 'मीता'
पंचकूला, हरियाणा

“सजना-सँवरना, सबके साथ पूजा करना, चाँद का इंतज़ार करना एक विशेष आनंदानुभूति देता है... शादी को 22 साल हो गए... हर साल ये व्रत रखती हूँ, कभी-कभी तो पति महाराज भी मेरे साथ व्रत रख लेते हैं... कुछ न कुछ यादगार रह ही जाती है...

साल के हर दिन पति का प्यार, उसकी लम्बी उम्र, वह स्वस्थ, निरोगी और प्रसन्न रहे... ये दुआएं हर स्त्री हमेशा ही मनाती है... पर करवाचौथ का दिन हम सभी के लिए कुछ खास होता है... पति के लिए तारों की छांव में सरगी करना, निर्जल व्रत रखना,

सजना-सँवरना, सबके साथ पूजा करना, चाँद का इंतज़ार करना एक विशेष आनंदानुभूति देता है... शादी को 22 साल हो गए... हर साल ये व्रत रखती हूँ, कभी-कभी तो पति महाराज भी मेरे साथ व्रत रख लेते हैं... कुछ न कुछ यादगार रह ही जाती है... पर शादी के पहले जो पहला करवा मनाया वो तो जैसे हमेशा मीठी और सुनहरी याद बन कर तन-मन को महकाता रहता है।

हुआ यूं कि हमारी सगाई जुलाई में हुई और 4 अक्टूबर को मेरी छोटी ननद की शादी हैदराबाद में हुई... वापसी पर मेरे पति, मेरी जेठानी और मेरी सासू माँ मुझे मेरे पहला करवा का सामान देने आये... प्योर शिफॉन की गोटा पट्टी लाल साड़ी, पर्ल्स का सेट, और मिठाई शगुन देते हुए सासू माँ ने कहा पूजा के बाद दूध, चाय, कॉफी में से जो चाहे एक चीज़ ले लेना तारों को जल दे देना और व्रत खोल लेना... व्रत वाले दिन मैं ही सबके आकर्षण का केंद्र थी... पहली बार साड़ी पहनी, मेहंदी चूड़ियां सब कुछ नया-नया और रोमांचक लग रहा था... भाभियाँ मेरे साथ चुहलबाज़ी कर रही थी... कोई भूख-प्यास तो महसूस नही हुई... शाम को तारों को पानी दे कर पूजा कर ली... पर सोचा पानी सबके साथ ही पी लूँगी... 8:45 चाँद आ गया हम सब छत पर चले गए... मेरे मम्मी-पापा, चाचा-चाची, मामा-मामी, मेरी छोटी बुआ-फूफा सब पास पास रहते हैं, इसलिए सब इकट्ठा हो जाते हैं। हमेशा की तरह... बस सब तैयारी हो गई थी सब स्त्रियां गगन के चाँद को अर्घ्य दे अपने चाँद को देखने लगीं... और मेरे कानों में एक आवाज़ आई... हमें भी तो कोई देख लो!!! मेरी सांसे तो जैसे रुक ही गईं... मेरे सामने मेरे होने वाले पति खड़े थे... सबके सामने मुझे गले लगाते हुए बोले हैप्पी करवाचौथ मीनाक्षी... और मैं तो शर्म से लाल, छुईमुई-सी... बस क्या ही कहूँ... इन्होंने इतना सीक्रेटली ये सब किया कि मेरा मन तो जैसे चांद की तरह गगन में उड़ चला...

इतने साल हो गए पर पहला करवा और उसकी मीठी यादों के बादल आज भी मन को कहीं दूर उड़ा ले जातें हैं... •

only books magazine

स्त्री शक्ति!

only books magazine

नलिनी श्रीवास्तव 'नील'
नई दिल्ली

> शिव जी अपने इस रूप से समाज को यह संदेश देना चाहते थे कि स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं है और समाज के निर्माण में दोनों की बराबर की भागी दारी है। स्त्री का सम्मान व अधिकार भी पुरुषों से कम नहीं है अपितु बराबर है।

जहाँ एक ओर 'स्त्री नरक का द्वार है' जैसी चीनी सूक्ति से चलकर प्रसाद की 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' के धरातल से आगे बढ़कर 'यत्र नारी पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के विधान तक पहुँची स्त्री वास्तव में कहाँ खड़ी है?

स्त्री तो परम अस्तित्व का अर्ध - भाग है, जिसके बिना शिव भी केवल शव है। भगवान भोले नाथ का अर्ध-नारीश्वर रूप इस परम सत्य को दर्शाता है। शिव जी ने अर्धनारीश्वर का रूप अपनी इच्छा से ब्रह्मा जी की तपस्या से प्रसन्न हो धारण किया था।

शिव जी अपने इस रूप से समाज को यह संदेश देना चाहते थे कि स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं है और समाज के निर्माण में दोनों की बराबर की भागी दारी है। स्त्री का सम्मान व अधिकार भी पुरुषों से कम नहीं है अपितु बराबर है।

पर समय के साथ - साथ समाज में बार - बार परिवर्तन हुए, हालात बदले स्त्रियों की स्थिति बदली, बद से बद्तर हुई ... शोचनीय हुई।

यदि हम प्राचीन काल के कुछ समय को छोड़ दें तो मुग़लों के शासन काल से स्त्रियों पर अनेकानेक अत्याचार हुए हैं। ये परम्परा टूटी नहीं बल्कि रूप बदल कर हर काल में एक विकट समस्या बन उभरी है।

वर्तमान परिवेश में हालात कुछ बदले हैं पर पूर्णतः नहीं। पुरुष भी स्त्रियों के प्रति उदार हुए हैं क्योंकि स्त्रियाँ अब जागरूक होकर... अत्याचार, अपमान और अन्याय के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठा रही हैं और शेरनी बन हर समस्या के ख़िलाफ़ लड़ने को तैयार हैं।

अब तो स्त्रियाँ हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। यदि देखा जाए तो कठिन परिस्थितियों में स्त्री का अदम्य साहस सदैव देखने को मिला। जीवन की लड़ाई अकेली भी लड़नी पड़ी, तो वे पीछे न हटी। एक ममतामयी स्त्री में देवी के सभी रूप समय-समय पर देखे जा सकते हैं जो शक्ति व ऊर्जा से भरे हुए हैं।

अन्त में सार कहें तो स्त्री - पुरुष के बीच एक सुन्दर तारतम्य हो तो ये संसार बहुत सुखद हो जाए क्योंकि स्त्री के न होने का अर्थ - जीवन में सरलता, माधुर्य और कोमलता का पूर्ण समापन ही होगा। भावनात्मक रूप से इस जगत को रहने लायक़ बनाने वाली वह प्राण शक्ति है, जिसके अभाव में सब कुछ ठूँठ और रसहीन है।

साक्षात्कार

हिंदी काव्य मंच और हास्य रस का संगम

हिंदी काव्य मंच पर अगर हास्य रस न हो तो वह नीरस काव्य गोष्ठी-सी लगने लगती है, उसी गोष्ठी में जिसके शामिल होने से वह विराट हास्य कवि सम्मेलन हो जाए वो हैं- हास्य व्यंग्य के सुपरिचित और सुप्रसिद्ध कवि श्री अरुण जैमिनी...

अरुण जी के अंदर की बातें बाहर निकाली हैं उन्हीं के मित्र गीतकार **डॉ. विष्णु सक्सैना** ने अपने 10 सवालों में...

अरुण जी आप हरियाणा में पैदा हुए, ऐसी क्या मजबूरी थी जो दिल्ली में आकर दिल्ली की जन गणना में वृद्धि की?

मेरे पिता श्री जेमिनी हरियाणवी एक अध्यापक थे उनकी नौकरी दिल्ली में थी। मेरे दादा-दादी हरियाणा के झज्झर जिले के बादली गांव में रहते थे। पुरानी परम्पराओं के अनुसार हम केवल पैदा होने के लिए हरियाणा गए, हमारा नाल भी वहीं गड़ा हुआ है। उसके बाद लालन पालन, शिक्षा दीक्षा सब दिल्ली में ही हुई। बोली में हरियाणवी लहजा इसलिए है कि रगों में हरियाणा की आबो हवा बहती है।

आपके पिता बहुत प्रसिद्ध कवि थे उनकी प्रसिद्धि आपकी प्रगति में सहायक बनी या बाधक?

पिताजी के कारण मुझे कभी कोई नुकसान नहीं हुआ, न ही लोगों ने पिताजी से कभी मेरी तुलना की। जैसे अमिताभ के अभिनय से अभिषेक की तुलना होती है ऐसा मेरे साथ कभी नहीं हुआ, क्यों कि मेरा पैटर्न बिल्कुल अलग था। पिताजी से मुझे फायदा ज़रूर मिला। उस वक्त के जो मंचीय कवि थे उनका मुझे खूब प्यार भी मिला और सहयोग भी।

किसी ज़माने में जिन चुटकलों को बहुत हेय दृष्टि से देखा जाता था वो आपके समय तक आते-आते बहुत सम्मानित स्थिति में पहुँच गए। इसका श्रेय आप किसको देंगे?

जब मैं मंच पर आया तो जो चंद लोग शानदार तरीक़े से चुटकले सुनाया करते थे उनमें सुरेंद्र शर्मा जी, प्रदीप चौबे जी, मनहर जी आदि रहे, इन लोगों से मैंने प्रेरणा ली। चुटकला प्रस्तुत करना भी एक कला है। इसलिए चुटकलों को ग्लेमर देने में आप मेरा गिलहरी प्रयास अवश्य मान सकते हैं। आप भी गीतकार हो गीत की फरमाइश तो लोग खूब करते होंगे लेकिन चुटकलों की फरमाइश नहीं देखी होगी, ये मेरे आने के बाद ही हुआ (शर्माते हुए) तो मेरा इतना योगदान तो माना ही जा सकता है।

लोग हास्य और व्यंग्य को एक ही खाने में रख देते हैं। आप इसे किस रूप में देखते हैं?

हास्य और व्यंग्य दोनों में बहुत अंतर है। हास्य रस है जब कि व्यंग्य रस नहीं है वो विधा है। व्यंग्य अगर हास्य की चाशनी में लपेट कर सुना दिया जाए तो वह बहुत मारक हो जाता है और सुनने वाले को मज़ा भी बहुत आता है। अगर अकेले ही व्यंग्य सुना दिया जाएगा

तो वह आक्रोश की कविता लगेगी। यह कॉम्बिनेशन बहुत अच्छा है, इसलिये लोग दोनों को एक साथ बोलकर इन्हें एक ही खाने में रख देते हैं।

आजकल आप गद्य लेखन बहुत कर रहे हैं, कोई ख़ास वजह?

कोई खास वजह नहीं, व्यंग्य लेख तो मैं पहले भी लिखता रहा हूँ 1981 में मेरा पहला व्यंग्य लेख छपा था, उसके बाद नवभारत, अहा ज़िंदगी, कादम्बिनी जैसी प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। होली जैसे पर्वों पर अनेक बार मेरे व्यंग्य लेख छप चुके हैं। चूंकि इन लेखों से कोई आर्थिक फायदा नहीं होता इसलिए लिखना बन्द कर दिया। कोरोना काल में फुरसत ही फुरसत मिली तो एक बार फिर से लेख लिखने का शौक पूरा कर लिया।

सोशल मीडिया ने कवि सम्मेलनों पर कैसा प्रभाव डाला है? नकारात्मक या सकारात्मक?

सोशल मीडिया से फायदा और नुकसान दोनों हुए हैं। फायदा यह कि आप रातों -रात प्रसिद्ध हो जाते हैं। नुकसान ये कि आपकी कविता

आजकल के युवाओं को कुंठा हीन, मस्त, और खुश मिजाज होना चाहिए। पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। नए कवियों ने धारा-प्रवाह चुटकले सुनाने को ही हास्य कविता समझ लिया है। ऐसा नहीं है। चुटकले को गढ़ने की कला भी आनी चाहिए। वो अध्ययनशील बनें और हास्य व्यंग्य के अच्छे मानक स्थापित करें उन्हें मेरी शुभकामनाएं हैं। साथ ही "मेरी निहारिका" जैसी सुंदर पत्रिका को भी धन्यवाद जो उन्होंने मुझे अपनी बात कहने का अवसर दिया।

बहुत जल्दी पुरानी हो जाती है। कभी-कभी तो लोग आपकी कविता को अपना बता कर डाल देते हैं, जब तक आप अपना दावा प्रस्तुत करें तब तक बहुत देर हो जाती हैं।

कोविड काल में जिन कवि, शायर, कलाकारों पर बेरोज़गारी की गाज गिरी है उसे आप किस रूप में देखते हैं?

कवि, शायरों और कलाकारों के बारे में इस दौरान किसी भी सरकार ने नहीं सोचा। दो साल से लोगों के रोटी कमाने के ज़रिए पर ऐसी गाज गिरी है कि लोग भुखमरी के कगार पर आ गए। कलाकार खुद्दार होता है वो काम मांगने के लिए तो आ सकता है लेकिन भीख माँगने नहीं जा सकता। इसलिए इनकी मदद के लिए भी सरकारों को आना चाहिए।

कविताओं में व्यवस्था पर चोट हो तो बात समझ मे आती है लेकिन आजकल आप सोशल मीडिया पर व्यक्ति पर चोट करते हैं ये तो उचित नहीं है।

अरे मेरे भाई! मैं व्यवस्था पर ही चोट करता हूँ। जो व्यक्ति पर चोट करते हैं वो नेता हो सकते हैं कवि नहीं। आजकल विडंबना ये है कि मैं व्यवस्था पर पोस्ट करूँ तो लोग व्यक्ति पर ले जाते हैं तो इसमे मेरा क्या कसूर है?

आपके पिता लोक भाषा के कवि रहे, आपकी कविताओं का लहजा भी हरियाणवी है। आप लोक भाषा के संवर्धन के लिए क्या कर रहे हैं?

बहुत अच्छा सवाल किया आपने। मैंने पिता के जाने के बाद "जेमिनी हरियाणवी चेरिटेबल ट्रस्ट" बनाया है इसके अंतर्गत प्रति वर्ष 5 सितंबर को लोक भाषा के एक कवि को 51 हज़ार रुपये का सम्मान दिया जाता है तथा एक लोकभाषा कवि सम्मेलन किया जाता है जिसमें हम सिर्फ क्षेत्रीय भाषा के कवियों को ही आमंत्रित करते हैं। आगे भी बहुत सारी योजनाएं है जिन्हें मूर्त रूप देना है।

चलते-चलते एक सवाल और... युवा हास्य कवियों को कविता लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

आजकल के युवाओं को कुंठा हीन, मस्त, और खुश मिजाज होना चाहिए। पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। नए कवियों ने धारा-प्रवाह चुटकले सुनाने को ही हास्य कविता समझ लिया है। ऐसा नहीं है। चुटकले को गढ़ने की कला भी आनी चाहिए। वो अध्ययनशील बनें और हास्य व्यंग्य के अच्छे मानक स्थापित करें उन्हें मेरी शुभकामनाएं हैं। साथ ही "मेरी निहारिका" जैसी सुंदर पत्रिका को भी धन्यवाद जो उन्होंने मुझे अपनी बात कहने का अवसर दिया।

चलो गरबा घूमें

हिन्दू धर्म में ईश्वर की आराधना करने के लिए भजन और आरती की जाती है जिसे सिर्फ पढ़ा नहीं बल्कि संगीत और वाद्य यंत्रों के साथ गाया भी जाता है। भक्तिरस से परिपूर्ण गरबा भी मां अंबा की भक्ति का तालियों और सुरों से लयबद्ध एक माध्यम है।

गरबा का नाम सुनते ही मेरे पैर अपने आप थिरकने लगते हैं। तो आइये आज हम आपको ले चलते हैं गरबा की ओर... आपको बता दें कि वैसे तो गरबा गुजरात, राजस्थान और मालवा प्रदेशों में प्रचलित एक लोकनृत्य है लेकिन इसे करने वाले सबसे ज्यादा गुजराती होते हैं। नवरात्रि के दिनों में गरबा की धूम अलग ही रौनक जमाती है। बहुत से लोग तो ऐसे हैं जो नवरात्रि का इंतजार ही इसलिए करते हैं क्योंकि इस दौरान उन्हें गरबा खेलने, रंग-बिरंगे कपड़े पहनने की अवसर मिलेगा।

गरबा को लोग पवित्र परंपरा से जोड़ते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह नृत्य माँ दुर्गा को काफी पसंद है। इसलिए नवरात्रि के दिनों में इस नृत्य के जरिये माँ को प्रसन्न करने की कोशिश की जाती है। इसलिए घट स्थापना होने के बाद इस नृत्य का आरंभ होता है। इसलिए आपको हर डांडिया नाईट में काफी सजे हुए घट दिखायी देते हैं। गुजरात में नवरात्रों के दिनों में लड़कियां कच्चे मिट्टी के घट जो दीपगर्भ भी कहलाता है ऐसे सछिद्र घड़े को फूल-पत्तियों से सजाकर उसके चारों ओर नृत्य करती हैं।

गरबा नृत्य में महिलाएं ताली, चुटकी, डांडिया और मंजीरों का प्रयोग भी करती हैं। ताल देने के लिए महिलाएं दो या फिर चार के समूह में विभिन्न प्रकार से ताल देती हैं। इस दौरान देवी शक्ति और कृष्ण की रासलीला से संबंधित गीत गाए जाते हैं। गुजरात के लोगों का मानना है कि यह नृत्य माँ अंबा को बहुत प्रिय है, इसलिए उन्हें प्रसन्न करने के लिए गरबा का आयोजन किया जाता है।

हिन्दू धर्म में ईश्वर की आराधना करने के लिए भजन और आरती की जाती है जिसे सिर्फ पढ़ा नहीं बल्कि संगीत और वाद्य यंत्रों के साथ गाया भी जाता है। भक्तिरस से परिपूर्ण गरबा भी मां अंबा की भक्ति का तालियों और सुरों से लयबद्ध एक माध्यम है।

गरबा सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है और अश्विन मास की नवरात्रों को गरबा नृत्योत्सव के रूप में मनाया जाता है।

कैसे लौटे पढ़ाई में ध्यान?

अर्चना त्यागी
अरविंद नगर, जोधपुर

> पढ़ाई कितनी भी मुश्किल हो लेकिन असंभव नहीं होती है। खुद की सामर्थ्य पर विश्वास रखें कि जल्द ही परिस्थितियों से सामंजस्य बिठा पाएंगे और सामान्य रह पाएंगे।

अंकित स्कूल तो जाने लगा था, लेकिन उसका मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था। पिछले एक डेढ़ साल से घर में ही था। स्कूल जाने की आदत छूट गई थी। टीचर्स के लेक्चर सुनना, होमवर्क करना और नहीं होने पर डांट सुनना अब आदत में नहीं रहे थे। अंकित एक औसत छात्र था लेकिन कक्षा के इंटेलिजेंट बच्चे भी इसी समस्या से गुज़र रहे थे। इतने लंबे समय तक घर के एक कमरे में बैठकर ऑनलाइन क्लास अटेंड करने से सभी एक अलग मानसिक स्थिति में पहुंच गए थे। छात्र, अभिभावक और अध्यापक तीनों ही नहीं समझ पा रहे थे कि ऐसा क्यों हो रहा है? इस समस्या का हल क्या है?

कोरोना ने जितना हमारे जीवन पर नकारात्मक प्रभाव छोड़ा है, उसकी गिनती करना मुश्किल है। हमें समझ लेना चाहिए कि आने वाले समय में भी इस तरह के दुष्प्रभाव सामने आते रहेंगे। छात्रों में हुए इस बदलाव को समाप्त करके उन्हे वापिस पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना होगा।

दोहरायी कार्य

भले ही छात्र की याददाश्त तेज हो फिर भी स्कूल में पढ़ाए गए विषयों को घर पर दोहराने की आवश्यकता होती है। ऐसा करने से वह टॉपिक समझ आ जाता है और याद भी रहता है। कुछ बातें अध्यापक के बताने से समझ नहीं आती बल्कि खुद पढ़ने से समझ आ जाती हैं।

पिछली कक्षा के टॉपिक

कक्षा छोटी हो या बड़ी, पिछली कक्षा के कुछ टॉपिक वापिस आते ही हैं। ये टॉपिक बीच बीच में आते हैं। शिक्षकों की आदत होती है उन टॉपिक को यह कहकर छोड़ देना कि वे पिछली कक्षा में आ चुके हैं। पहले की बात अलग थी लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा करना उचित नहीं होगा। कई विद्यार्थियों ने ऑनलाइन पढ़ाई भी नहीं की है और अगली कक्षा में प्रोन्नत हो गए हैं। अध्यापक से उन टॉपिक को पढ़ें। इससे विषय पर पकड़ मजबूत होगी।

परामर्श कक्षाएं

विद्यालयों ने कक्षाएं तो शुरू कर दी हैं लेकिन छात्रों से उनकी मन स्थिति के विषय में कोई बात नहीं की है। कोर्स पूरा करना ही उनका लक्ष्य है। अभिभावक इतनी फीस देकर अपने बच्चों को स्कूल भेज रहे हैं। स्कूलों का भी दायित्व है कि विद्यार्थियों से उनकी पढ़ाई में आ रही समस्याओं के बारे में चर्चा करें और ऐसा वातावरण बनाएं कि छात्र पुनः विद्यालय से खुद को जोड़ सकें। शिक्षक कड़ाई से नहीं बल्कि सहानुभूति से उनके साथ पेश आएं। विद्यार्थियों को बताया जाना चाहिए कि इस माहौल में उन्हें कैसे खुद को ढालना है।

आत्मविश्वास नहीं खोयें

आत्मविश्वास वह गुण है जो असंभव को संभव में बदल देता है। इसलिए विद्यार्थियों को आत्मविश्वास बनाकर रखना है। पढ़ाई कितनी भी मुश्किल हो लेकिन असंभव नहीं होती है। खुद की सामर्थ्य पर विश्वास रखें कि जल्द ही परिस्थितियों से सामंजस्य बिठा पाएंगे और सामान्य रह पाएंगे। ऐसा बिल्कुल नहीं सोचें कि पिछली दो कक्षाएं बिना पढ़े उत्तीर्ण की हैं तो अब पढ़कर परीक्षा दे ही नहीं पाएंगे। बदलाव प्रगति की ओर ले जाता है और ठहराव प्रगति को रोक देता है।

उदार शिक्षा

विदेशों की भांति यदि हमारे देश में भी लिबरल एजुकेशन को अपना लिया जाए तो यह समस्या काफी हद तक खत्म हो सकती है। अपनी रुचि के विषय पढ़ने से ध्यान नहीं भटकता है। अपनी रुचि के कार्य करने के लिए हमें समय नहीं निकलना पड़ता है। हम व्यस्तता के बावजूद उस कार्य को पूरा करते हैं। यही नीति यदि शिक्षा में अपनाई जाए तो छात्रों को बेहतर करने से कोई बाधा नहीं रोक पाएगी।

बुज़ुर्ग...

जीवन संघर्षों का जीवंत अनुभव

विनय गांगिल

> जीवन संघर्षों का जीवंत अनुभव वो भी बिल्कुल पुख्ता। बेशक यह भी मुमकिन है कि आने वाले वक्त में जीवन संघर्ष के अनुभवों, नैतिक शिक्षा, सदाचार मूल्यों के हस्तांतरण का स्वरूप भी बदल जाएं पर जो यह सब बांटने के लिए तब भी मिलेगा वह है बुजुर्ग।

प्रकृति के नियम यथार्थ सत्य ही नही बल्कि यथार्थ विज्ञान भी होते हैं। जो हमें समय-समय पर यह आभास कराते रहते हैं कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किए बगैर हमारा अस्तित्व ख़तरे में एवं अस्थिर है। ठीक इसी प्रकार वर्तमान पीढ़ी के उनसे पहले की पीढ़ी के साथ सामंजस्य स्थापित किए बगैर रिश्तों में संवेदनाएं, सामाजिक नैतिकता, नीतिशास्त्र, सदाचार मूल्य ख़तरे में एवं अस्थिर हैं।

सर्द रातों में मिट्टी की बरोसी में सुलगती हुई आग के इर्द-गिर्द कुछ अधपके बालों में, कुछ चेहरे पर एक लम्बी उम्र के अनुभवों को दर्शाती झुर्रियों में, कुछ हजारों सूरज को उगते-डूबते देखने के बाद आंखों में धुंध समेटे परिपक्व बुढापे की पगड़ी बांधे उन बुजुर्गों को, शहर से गांवों की ओर चलने वाली आधुनिकता की आंधियों ने न जाने कब सामाजिक धरोहर के पेड़ से, पुरानी टहनी की तरह फाड़ उन्हें इतनी तेजी से दूर उड़ा दिया कि हमें पता ही नही चला। उन बूढ़े अनुभवों को समझने के लिए अभी हम कोसों दूर हैं। हमारे अपने घरों में ज़िन्दगी की जंग के अनुभवी सेनानियों से हमने इतनी रफ्तार से हाथ छुड़ाया कि वो बूढ़े लड़खड़ाते पांव हमें आशीर्वाद देने तक के लिए न बढ़ पाए।

क्या यह हमारी जिम्मेदारी एवं दायित्व नहीं है कि हम हमारे बड़े, बूढ़े, बुजुर्गों का सानिध्य प्राप्त करें उन्हे अपने साथ रखें उनके साथ वक्त बिताए उनके सुख-दुख की संवेदनाएं बांटे, कभी उनके गुज़रे पलों की पोटलियां मांगे कभी अपने वक्त की आधुनिकता की अटैची खोलकर दिखाएं। हमने रिश्तों में निजता, एकान्तता, गोपनीयता, को इतना तूल दिया कि माँ-पापा, दादा-दादी, नाना-नानी को भूल ही गए, आज हम इतने स्तर तक गिर गए है कि ख़ुद के बुजुर्गों को बेसुध होकर छोड़कर दूसरे शहरों में रहने चले जाते हैं और वर्षों तक देखने भी नहीं आते पर अपने कार्यालयों एवं कम्पनियों में सामाजिक नैतिकता और नीतिशास्त्र का ढोंग रचाते हुए चन्दा इकठ्ठा कर एक दिन ओल्ड एज होम हो आते हैं। और बुजुर्गों के प्रति दायित्व का सालभर का कोटा उनके साथ कुछ एक तस्वीर खींच पूरा कर लेते हैं।

एक ओर जहां हम दिनचर्या के पल-पल की ख़बर सोशल मीडिया पर डाल रहे होते हैं तो दूसरी ओर हम स्वयं ही निजता का ढिंढोरा पीट बुजुर्गों को हमारी दिनचर्या पर नज़र रखने के लिए घृणित भाव से देखते हैं।

मनुष्य की उन्नति के लिए आधुनिकता बेहद आवश्यक और उपयोगी है परंतु यह सार्थक तब ही है जब सामाजिक और नैतिक मूल्यों के साथ रिश्तों की संवेदनाओं और अहसासों को जिन्दा रखें। हमें सदैव यह याद रखना होगा कि प्रकृति में विद्यमान हर एक चीज चक्र में होती है। आज भले ही हम अनेक स्वार्थों के कारण बड़े-बुजुर्गों को और उनके सानिध्य को छोड़कर जीवन में आगे बढ़ रहे हों पर कालचक्र जब भी ख़ुद को दोहराएगा हमें या हमारी आने वाली पीढ़ियों को पुनः बड़े बुजुर्गों के सानिध्य में वापस लौटना ही पड़ेगा। हो सकता है तब सर्दी में अलाव तापते हुए बुजुर्ग न मिले पर जो तब भी मिलेगा वह है जीवन संघर्षों का जीवंत अनुभव वो भी बिल्कुल पुख्ता। बेशक यह भी मुमकिन है कि आने वाले वक्त में जीवन संघर्ष के अनुभवों, नैतिक शिक्षा, सदाचार मूल्यों के हस्तांतरण का स्वरूप भी बदल जाएं पर जो यह सब बांटने के लिए तब भी मिलेगा वह है बुजुर्ग।

ॐ सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते। ।

हे नारायणी! आप सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सारे परुषार्थों को सिद्ध करने वाली, शरणागतवत्सला, तीन नेत्रों वाली त्रिनेत्रा एवं महागौरी हो। आपको नमस्कार है।।

नवरात्रि के पावन अवसर पर हम आपको माँ दुर्गा के नवरुपों से मिलवाते हैं।

दुर्गा परम सनातनी, जग की सृजन हार।
आदि भवानी महादेवी, सृष्टि का आधार।
नवरात्रि का आया त्योहार,
संग मे लाया खुशियाँ हजार।
नवदुर्गा का करें आह्वान,
दीप प्रज्ज्वलित प्रतिमान।

मंजू शर्मा
भुवनेश्वर, ओडिशा

प्रथम रुप

शैलपुत्री

माँ दुर्गा का प्रथम रुप,
शैलपुत्री कहाता है।
नवरात्रों के पहले दिन,
इसको पूजा जाता है।

पर्वतराज के घर जन्मी,
करी तपस्या वन में जा-
माँ शैलसुता अवतारी,
जग की भाग्य विधाता है।

द्वितीय स्वरुप

माँ ब्रह्मचारिणी

हे माँ देवी ब्रह्मचारिणी,
तेरी शक्ति अपार है।
तेरी भक्ति में मन लगता,
भक्तों पर तेरा दुलार है।

हम अपनी शक्ति को जानें,
प्रकाश पुंज को पहचाने।
संसार में जैसे भी रहो,
ब्रह्माण्ड को खुद में ही जानें।

तृतीय रुप

चंद्रघंटा

सौम्य, शांति से परिपूर्ण,
माथे पर अर्ध घंटा चंद्र।
मिलती जब कष्टों से मुक्ति,
मन बन जाता है समुद्र।

चहुँ ओर तिमिर घिरा है,
लोभ मोह व्याभिचार निरा है।
शरण में आई हूँ मेरी मैया,
पार लगाओ मेरी नैया।

चतुर्थ रुप

माँ कूष्माण्डा

ब्रम्हांड को उत्पन्न करने वाली,
तू दुर्गा माँ, तू ही काली।
सिंह की करके सवारी,
दैत्यों की सब सेना मारी।

चतुर्थ रुप करती है धारण,
दुखों का करती है निवारण।
भक्ति भाव से जो कोई ध्याता,
मन की शांति वो पा जाता।

माँ कूष्माण्डा देती संदेश,
सूक्ष्मता में विशालता
भीतर जो शक्ति है बसती,
वही हमारी व्यापता।

पाँचवाँ रूप

स्कंदमाता

नवशक्तियों में पांचवां रूप,
स्कंदमाता का है अनूप।
दाएं हाथ में स्कंद विराजे,
बाएं हाथ में कमल है साजे।

तारकासुर का असुर प्रकोप,
भय से कांप रहे तिहु लोक।
सिंह सवारी करके आई,
तारकासुर को परलोक पहुँचाई।

छटा रूप

कात्यायनी

कात्यायन ऋषि की पुत्री,
माँ कात्यायनी कहलाती है।
नवरात्रि के षष्ठी दिन,
माँ की पूजा की जाती है।

चार भुजाओं वाली माता,
हस्त कमल में शोभित है।
लाल चुनरिया, हाथ में कंगन,
अद्भुत श्रृंगार सुशोभित है।

माँ की भक्ति जो भी करता,
मन में रख विश्वास।
अपना आशीर्वाद दे,
माँ पूर्ण करती आस।

सप्तम रूप

माँ कालरात्रि

स्याह रूप है कालिका,
मुण्डमाल विकराल।
रक्तबीज के खून से,
हाथ रचे हैं लाल।

नौ देवियों में एक रूप,
शिव शक्ति है स्वरूप।
क्रोध में चंडी बन जाए,
दिखता जब विकराल रूप।

आदिशक्ति अनन्त माँ काली,
सातवां रूप धरे विकराली।
संहार दुष्टों का करने आई,
मिटी धरा की सब अकुलाई।

अष्टम रूप

महागौरी

गौर वर्ण है आदिशक्ति,
श्वेत वस्त्र हैं धारण करती।
अभय हस्त है मुद्रा धारी,
त्रिशूल, डमरु शस्त्रधारी।

नन्हें-नन्हें कदमों-से आई,
महावर, पायल पैर सजाई।
स्नेह-से उनके पाँव पखारूँ,
भोली-सी सूरत को निहारूँ।

अक्षत-रोली तिलक सजाऊँ,
अमोघ शक्ति माँ से पाऊँ।
खुश होकर माँ आशीष देती,
अखंड सौभाग्य का वर देती।

नवा स्वरूप

माँ सिद्धिदात्री

नव-निधियाँ सभी सिद्धियाँ,
देती सिद्धिदात्री।
खाली हाथ कोई भक्त नहीं
जाता,
चाहे आओ रात्रि। ।
चार भुजाओं से शोभित,
कमल पर सदा विराजती।
शंख चक्र और गदा संग,
भक्तों को उबारती।

शिव ने भी तप किया आपका,
तब अर्धनारीश्वर कहलाए।
देवों के वो देव बनें,
महादेव शंकर सर्वेश्वर कहलाए।

ॐ जयन्ती मंगला काली, भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री, स्वाहा स्वधा नमोस्तुते। ।

सुखी रहे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा भक्त की, माता पूरी होय।
नारायणी माँ आप हो, पाप की मोचन हार।
क्षमा करो अपराध सब, कर दो भव से पार।

आप सभी को मेरी निहारिका की ओर से नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं।

कलयुग में कैसे आएँगे राम कैसे होगी राम-राज्य की स्थापना?

“ हर किसी को राम के आने का इंतज़ार है पर कोई स्वयं अपने अंदर के राम को जगाने को तैयार नहीं है। राम के अवतरण से पहले ज़रूरी है हमें अपने अंदर के राम को जगाने की।

आरती ‘आरज़ू’
यूएसए

कहते है कि त्रेता युग में अधर्म जब हद से बढ़ने लगा तो सभी सन्यासियों ने यज्ञ हवन कर भगवान का आह्वान किया और धरती से अधर्मी राक्षसों का वध करने की गुहार लगाई। उस युग में श्री विष्णु भगवान ने श्री राम का अवतार लिया और रावण सहित सभी राक्षसों का वध कर अधर्म पर धर्म की विजय प्राप्त की। आज कलयुग में भी अधर्म और पाप इतना बढ़ चुका है, कि अधर्म और पाप के चलते मानवता अपना दम घुटने से सिसक रही है लेकिन कौन लगाए गुहार भगवान से रक्षा की? कौन करेगा यज्ञ या हवन भगवान को बुलाने को? जबकि आज के समय में तो इंसान ही अधर्म फैला रहे हैं। बड़े बुजुर्ग कहते हैं और हमने सभी धर्म-ग्रंथो में भी पढ़ा है कि हम मानव ईश्वर की संतान है और हम सभी के हृदय में उस परमेश्वर का वास है, तो इस हिसाब से हर पुरुष के अंदर एक राम है। आज कितने ही भोले-भाले राम अपना घर त्याग कर, आजीविका चलाने के लिए अपने कर्म-पथ पर अग्रसर रहते हैं। लेकिन बाद में भ्रष्टाचार और राजनीति के चलते राम स्वरूप अपनाने की बजाए शकुनि की तरह चालें चलने में अधिक सहूलियत समझते हैं।

वह राम पीछे छोड़ जाते है किसी सीता को जो पल-पल अग्नि परीक्षा देती हुई, अपने राम का परिवार सम्भालती है या फिर कुछ सीताएँ अपने राम के साथ कंधे से कंधा मिला कर खड़ी रहें, तब भी उनकी मुश्किलें कहाँ कम होती है। उन्हें हर मोड़ पर भोग की वस्तु समझ कोई ना कोई दानव उनके चीर-हरण करने को तैयार है। कितने ही छोटे बच्चे-बच्चियाँ छल का शिकार हो कर अहिल्या की तरह पाषाण बन चुके, इंतज़ार कर रहे हैं अपनी मुक्ति का। मान लें कि राम आ भी जाए तो धर्म, क्षेत्र और जाति के विवादों में उलझे हम उन्हें समझ भी पाएँगे? कोई व्यक्ति यदि नेक काम करता है तो भी उसके ही विरुद्ध सब खड़े हो जाते हैं। ऐसे में राम कैसे उद्धार करेंगे सबका?

हर किसी को राम के आने का इंतज़ार है पर कोई स्वयं अपने अंदर के राम को जगाने को तैयार नहीं है। राम के अवतरण से पहले ज़रूरी है हमें अपने अंदर के राम को जगाने की। राम सिर्फ़ एक नाम नहीं एक ऊर्जा स्त्रोत है एक आत्मिक ख़ुशी है। राम के आने से पहले हमें राम के गुण आत्मसात् करने होंगे, बुराई को अनदेखा करने की जगह, उससे लड़ने और उसे दूर भागने के प्रयास करने होंगे। कहते है ना भगवान भी उसी की रक्षा करते है जो स्वयं अपनी रक्षा के लिए कदम आगे बढ़ाता है। अपने अंदर के राम को जगा कर हर बुराई से लड़ने को तैयार रहना है ताकि कोई राम आगे बढ़े तो उनका सहयोग कर पाएँगे और राम-राज्य की स्थापना में सहायक हो सकें।

मेरे राम...!

आभा चौहान
अहमदाबाद

मर्यादा का है उदाहरण,
मेरे प्रभु श्री राम जी।
नाम अगर इनका जप लो तो,
पूर्ण हो सब काम जी।

गुरु के आश्रम में जाकर,
सच्ची शिक्षा उन्होंने पाई।
बचपन की मित्रता देखो,
पूरे जीवन है निभाई।

गुरु आज्ञा को भगवन पाकर,
लक्ष्मण संग में चले वो लेकर।
राक्षसी ताड़का मार गिराई,
स्वयंवर जीत कर सीता पाई।

पिता का वचन पूरा करने को,
चौदह वर्ष गए वो वन को।
देह छोड़कर पिता चले गए,
बिना पिता के रघुवर रह गए।

सोन मृग एक वन में आया,
सीता माँ का मन ललचाया।
पीछा करने गए जो रघुवर,
रावण ले गया सीता हरकर। ।

कुटिया में सीता ना पाकर,
दुखी हो गए रघुवर।

सीते-सीते कह के भगवन,
प्रिय को ढूंढे देखो वन-वन।

मिले जटायु राज बताया,
लंका का रास्ता दिखलाया।
सीता की खोज में निकले,
मित्र हनुमत जैसे मिले।

सागर पार गए हनुमंता
भस्म करी सोने की लंका।
मां सीता का पता लगाया
प्रभु संदेश उन तक पहुंचाया।

सागर पर पुल को बनवाया,
विभीषण को भी मित्र बनाया।
लंका पर प्रभु ने की चढ़ाई,
मार के रावण सीता पाई।

पुष्पक विमान में बैठ रघुवर,
अवध में पहुंचे वह अपने घर।
खुशी से देखो सब हर्षाए,
सब ने घर पर दिए लगाए।

रामराज्य वहां किया स्थापित,
सबका हृदय हुआ बहु हर्षित। ।

मिलकर बोलो जय श्री राम
पूर्ण होंगे सबके काम।

रावण दहन

रचनाकार :
रंजन मिश्र बिरागी
भदोही, उत्तरप्रदेश

जल रहा रावण मगर क्या मर रहा है वह?
मर रहा है गर तो फिर क्यों हँस रहा है वह?

भीड़ से इक बाण अग्नि को समेटे आ रहा,
देखकर उसको दशानन किन्तु ना घबरा रहा,
मुण्ड कट कर गिर रहे थे रुण्ड से होकर विलग,
पर असुर कुछ और ही विकराल होता जा रहा!!

नाभि कुण्ड हो चला शून्य जाने वाली थी जान,
पर रावण के चेहरे पर थी इक विजयी मुस्कान,
मैं बड़ा अचंभित हुआ देखकर, पूँछ लिया आगे बढ़कर,
अब क्यू अट्टहास करता है अब कैसा अभिमान?
चंद पलों में ओझल होगा निकल रहे है प्रान?

रावण बोला ऐ अदने कवि जाओ करो विश्राम,
मैं न मरूंगा इस कलयुग में यहाँ नहीं है राम,
भीड़ को इंगित करके बोला - मेरा ही कुनबा है,
मैं ही खड़ा हुँ इन सब में भी बदल के अपना नाम!!

मेरे दस आनन दृश्यमान थे, सो तुमने पहचान लिया,
बीस भुजाएं महाकाय थे, तुमने रावन नाम दिया,
अब बड़ा कठिन होगा कविवर, मैंने भी आदम रूप लिया,
अंदर वही अँधेरा है, बस बाहर बाहर धुप किया!!

पहले दस चेहरे थे, अब तो एक में दस रखता हुँ,
बीस भुजाये भी अदृश्य कर मानव सा दिखता हुँ,
ये रावण दहने आये है जो पहन राम परिधान,
मैं इनमे भी जिन्दा हुँ बस इसी लिए अभिमान।

केवल धनुष पकड़ लेने से कोई न होता राम,
मर्यादा पुरुषोत्तम जैसे होने चईये काम!!!
बोलो जय सिया राम... . ...

विदाई की वह शाम...

डॉ. नवीन दवे मनावत
कैलाश नगर सांचोर, जालोर

विदाई के साथ-साथ उसने
विदा ले ली थी घर की अलमारियों से...
जिसमें जमा थी...
उसकी संगिनी, पुस्तकें, स्कूटी की चाबी
सलवार, जिंस और विवाह पूर्व की अपूर्व यादें!
घर की दीवारों को थपथपाकर,
उस पर लीप दी थी जिम्मेदारियां...
घर के हर दरवाजे को सचेत कर दिया कि,
कोई आगंतुक निराश न जाए...
और आंगन में खड़े वृद्ध नीम को अंतिम प्रणाम किया...
कि रहना सदा हरा,
देना छाया और सुख की हवा...
विदाई के समय उसके सभी प्रश्न समाप्त हो गये थे...
जो किये गये थे आत्मीयजनों के साथ...
पर उस घर में उसकी ममतामयी पूंजी का अधिकोष...
आज भी भरपूर है...
बस डेबिट-क्रेडिट अनिश्चित रहते हैं...
उसकी विदाई की वह शाम
आज भी करती हैं प्रतीक्षा
कि विदा होना कितना दुर्गम सच है।

आँखों का क़रार...

सीमा यादव

तेरी आंखों से मेरी आँखों का हुआ कुछ क़रार-सा है।
यूँ बहुत यकीन तो नहीं तुझपे, हाँ मगर एतबार-सा है।

सच कहूँ या ना कहूँ, मेरे नफी मुझे बता दे।
ऐसे ज्यादा तो नहीं, हाँ मगर प्यार-सा है।

हाल जो देख मेरा, करती है मोल भाव वो।
लगता है शहर सारा, उसको एक बाजार-सा है।

और बात तुझसे कर भी लेता, कहना था जो कह भी देता
पर दिल जरा पेशानी मे है, ये अभी बीमार-सा है।

इस दिन को कह भी देता बदसूरत, बेरंग-सा...
पर जो ये शाम ए असमान है, ये तेरे रुखसार-सा है।

सूनी गालियां सूने चौराहे सूने सूने महकशो के दर है
लगता है इनको भी तेरे, इनसे गुजरने का इंतजार-सा है।

एक तेरा सुकून बचा है.. इस मुखतलिस-सी जिन्दगी में...
बाकी तो सब आफतो का, जैसे कोई अम्बार-सा है

कोलकाता आमार शोनार बांग्ला

कला और संस्कृति का अनूठा संगम भी आपको यहीं पर देखने को मिलता है। तो चलिए हम बताते हैं कि क्या कुछ और है यहां, जिसे आप देखना चाहते हैं। 'सिटी ऑफ़ जॉय' के नाम से प्रसिद्ध पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता एक बेहद ही खूबसूरत शहर है।

मेघना टिबड़ेवाला
मुम्बई

कोलकाता एक तिलिस्म है, कला का शहर कोलकाता, काले जादू का नगर कोलकाता, इस कोलकता का गेटवे है "हावड़ा ब्रिज"। जी हाँ, कोलकाता में प्रवेश के लिए ब्रिटिश काल में बसे आइकोनिक ब्रिज से गुजरना एक अनुभव है। लोहे का बना ये गेट दो छोरों के बीच लटकता है। इसकी पूरी झलक लेना है तो आपको कुकरी में उतरना होगा और नाव में भी चढ़ना होगा। जी हां, यह सब इसलिए भी बताना जरूरी है कि यदि आपको कोलकाता घूमने जाना है तो रेलवे स्टेशन के बाहर हुगली नदी पर बना यह ब्रिज ही कोलकाता जाने के लिए सबसे पहले स्वागत करता मिलेगा। एक बात और आप यह भ्रम भी तोड़ दीजिए कि कोलकाता नाम का कोई रेलवे स्टेशन होगा। जी नहीं, इस नाम का कोई स्टेशन नहीं है। कोलकाता जाना है तो हावड़ा स्टेशन पर ही उतरना होगा। बाहर निकलोगे तो एक बहुत विशाल नदी दिखेगी जो किसी छोटे समंदर से कम नहीं होगी। इसी नदी पर बना है "हावड़ा ब्रिज" जो कोलकाता को जोड़ता है। आपको कोलकता जाना है तो इसी ब्रिज से होकर जाना होगा।

तो हम चलते हैं- कोलकाता हालांकि, कोलकाता कभी भी घूमा जा सकता है, लेकिन दुर्गा-पूजा के पर्व पर अगर आप कोलकाता

जा रहे हैं तो यहां आप दोहरा आनंद उठा सकेंगे। पश्चिम बंगाल के इस शहर में आपको दुर्गा पूजा के दौरान मैसूर के किले से लेकर देश-विदेश की ऐतिहासिक इमारतें देखने को मिल जाएंगी। खासकर दुर्गापूजा के दौरान बने पांडाल। आपको देखकर लगेगा कि आप वाकई किसी ऐतिहासिक इमारत में घूम रहे हैं। कला और संस्कृति का अनूठा संगम भी आपको यहीं पर देखने को मिलता है। तो चलिए हम बताते हैं कि क्या कुछ और है यहां, जिसे आप देखना चाहते हैं।

'सिटी ऑफ़ जॉय' के नाम से प्रसिद्ध पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता एक बेहद ही खूबसूरत शहर है।

प्रिंसेस घाट

अगर आप कोलकाता में अपने स्पेशल वन के साथ अच्छा और रोमांटिक समय गुजराने के लिए कोई खास जगह की तलाश में हैं तो प्रिंसेस घाट सबसे बेस्ट है। प्रिन्सेस घाट का निर्माण आंग्ल-भारतीय विद्वान और पुरातत्वविद् जेम्स प्रिंसेस की याद में वर्ष 1841 में हुआ था। आप यहां फेरी की सवारी के साथ डूबते हुए सूरज को भी देख सकते हैं। बता दें, फिल्म परिणीता के एक गाने की शूटिंग भी इस घाट पर सम्पन्न हो चुकी है। इस घाट से हुगली ब्रिज की खूबसूरती को भी निहारा जा सकता है, जो शाम के समय रोशनी की जगमगाहट में बेहद ही खूबसूरत नजर आता है।

विक्टोरिया मेमोरियल

विक्टोरिया मैमोरियल भारत में अंग्रेजी राज को दी गई एक श्रद्धांजलि है। इसे पुनः निर्मित किया गया था और यह ताजमहल पर आधारित था। इसे आम जनता के लिए 1921 में खोला गया था। इसमें शाही परिवार की कुछ तस्वीरें भी हैं। इन बेशकीमती प्रदर्शन के अलावा पर्यटक विक्टोरिया मेमोरियल की ख़ूबसूरत संरचना को देखने यहाँ आते हैं। यह जगह शाम को दोस्तों और सपरिवार के साथ समय बिताने के लिए एकदम परफेक्ट है। सर्दियों के दौरान आप यहां पिकनिक भी मना सकते हैं। साथ ही तोंगा गाड़ी का लुत्फ भी ले सकते हैं। पर्यटक इस मेमोरियल को सुबह 10 से 5 बजे तक देख सकते हैं।

तेरेत्तीक मॉर्निंग मार्केट

सर्दी के मौसम में इस शहर की सुबह ज़रा देर से होती है। सुबह घूमने निकलते समय सबसे पहले तेरेत्तीक मार्केट जाएं क्योंकि यहां आपको स्वादिष्ट नाश्ते का ज़ायका लेने का मौका मिलेगा। ये मार्केट कोलकाता के छिपे हुए खजानों में से एक है। ये मार्केट सुबह जल्दी ही खुल जाती है। इसे आप कोलकाता का 'मिनी चाइना टाउन' कह सकते हैं क्योंकि यहां पर आपको इस शहर के बेहतरीन मोमोज़, नूडल्सट, प्रॉन और अन्य चाइनीज़ डिश मिल जाएगीं।

इन सबको देखकर जब आप अपने शहर को लौटेंगे तो वही हुगली नदी का किनारा, ढलती शाम, संवलाया आकाश, अनंत क्षितिज, निविड़ अंधकार, निशब्द यामिनी, जैसे पीछे छूट रही है वैसे ही कुछ देर बाद यह शहर भी हमसे छूट जाएगा, लेकिन यहां की स्मृतियां आपके ज़ेहन में हमेशा ताज़ा रहेंगी।

कांच के शहर से निकला हीरा

सपना गुप्ता

जब इंसान खुद का जीवन दूसरे के लिए समर्पित कर देता है तो ईश्वर भी उसके साथ खड़े हो जाते हैं। सपना गुप्ता इसकी एक बानगी है। आज हम सभी को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम कुछ ऐसा कर चले कि यहां से जाने के बाद हम हंसे और जग रोए।

ईशु गुप्ता
हैदराबाद

बेहतरीन कांच हो या हीरा, दोनों को पहचानना बहुत ही मश्किल है। खासकर तब, जब कांच के शहर में कोई बेशकीमती हीरा पड़ा हो। जी हां ...आप सही समझ रहे हैं। मैं उत्तर प्रदेश के जिला फिरोजाबाद की बात कर रहा हूं, जहाँ कांच का विश्व में बेहतरीन काम होता है। यहाँ चूडियों से लेकर झालरऔर झूमर तक एक से एक बेशकीमती। इस कांच की नगरी में कहीं हीरा पड़ा हो तो उसे पहचानना मुश्किल है। मैं आज से 40 साल पहले की बात करता हूं। इस शहर में एक हीरा था जो आज वहां से निकलकर अब मोतियों के शहर हैदराबाद में जाकर बस गया है। छोटी सी उम्र में उस हीरे ने अपनी क्या पहचान बनाई ?समाज को उसने क्या दिया? अपने लिए उसने क्या किया और छोटी सी उम्र से लेकर आज 40 साल में मील का पत्थर साबित हुई है ये शख्सियत। तो आज हम परिचय करा रहें हैं फिरोजाबाद के परिवार में जन्मी बेटी सपना गुप्ता की। जो वहाँ से चलकर हैदराबाद पहुंची और वहाँ उन्होंने अपना एक नया मुकाम हासिल किया।

समाज का क्षेत्र हो या फिर व्यक्तिगत।हर क्षेत्र में वह अग्रणीय रही हैं। इसके लिए उन्हें कई बार सम्मानित भी किया जा चुका है। यहाँ तक की 1975 में पूर्व राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली अहमद भी उन्हें आगरा के एक समारोह में सम्मानित किया।यह वह दौर था जब वह बहुत छोटी सी उम्र में थी। उन्हें नहीं पता था कि आगे आने वाले दिनों में इस सम्मान का क्या महत्व है।लेकिन उनका एक मकसद था कि आज उन्हें जो सम्मान मिला है वो आगे चलकर उन्हे एक नई दिशा देगा। तो हम बात करते हैं सपना गुप्ता के सफर की और उनसे जुड़ी तमाम यादों की।

हैदराबाद आकर मैंने बच्चों को संगीत की शिक्षा देनी शुरू की और मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज करीब 2000 से अधिक ऐसे बच्चे हैं जो संगीत के क्षेत्र में अगल पहचान बना रहे हैं। तबला, ढोलक और अन्य वाद्य का प्रशिक्षण देना फिर दूसरे सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना मेरी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। यह सब इसलिए भी संभव हो सका कि मेरे पति और बच्चों ने भी मुझे पूरा सहयोग दिया। मैंने 10 साल की उम्र में इलाहाबाद में कत्थक नृत्य किया जो काफी सराहा गया।

सपना जीः आपका मेरी निहारिका में स्वागत है। आप कांच के शहर फिरोजाबाद से हैं। कांच तो चुभन पैदा करते हैं, लेकिन आपने तो हरेक की जिंदगी से चुभन दूर करने का काम किया। इसके पीछे क्या कहानी है?

अरे ऐसा कुछ नहीं। मैं भी मिडिल क्लास फैमली से हूं। बचपन में वह सारी परेशानी मुझे भी हुई जो मध्यम वर्ग के परिवारों में आती है, पर मैं कभी हारी नहीं। हमेशा यह सोचती रही कि खुद से ज्यादा दूसरों के लिए क्या कर सकती हूं। यह आदत मेरी बचपन में ही पड़ गई थी और कहते हैं कि आप जैसी नींव डालोगे इमारत उतनी ही बुलंद या कमजोर होगी। बचपन में जो कुछ सीखा, समझा उसे मैंने बड़े होकर समाज सेवा में लगा दिया। मुझे बचपन से ही संगीत का शौक था। हैदराबाद आकर मैंने बच्चों को संगीत की शिक्षा देनी शुरू की और मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि आज करीब 2000 से अधिक ऐसे बच्चे हैं जो संगीत के क्षेत्र में अगल पहचान बना रहे हैं। तबला, ढोलक और अन्य वाद्य का प्रशिक्षण देना फिर दूसरे सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना मेरी जिंदगी का हिस्सा बन चुका है। यह सब इसलिए भी संभव हो सका कि मेरे पति और बच्चों ने भी मुझे पूरा सहयोग दिया। मैंने 10 साल की उम्र में इलाहाबाद में कत्थक नृत्य किया जो काफी सराहा गया। इसके बाद मैंने हैदराबाद मे भी कत्थक और कुचिपुडी की कक्षाएं शुरू की।आज उसमें मेरे द्वारा प्रशिक्षित लड़के लड़कियाँ एक मुकाम हासिल कर चुकी है। देश भर में 100 से ज्यादा अब बच्चे क्लासेस चला रहे हैं।

सोशल गतिविधियों में आप किस तरह सहभागिता निभाती हैं?

कोरोना काल के बाद हमारी सोशल गतिविधियाँ बढ़ी। कोई परिवार भूखा न सोए।इस दिशा में हमारी टीम ने रात दिन काम किया। ऑक्सीजन सिलेंडर तथा दूसरे संसाधनों को पूरा जुटाने में हम सब लगे रहे और हमें गर्व है कि अपनी टीम और समाज की मदद से हम यह लड़ाई जीत सके। हमें पहली बार " वसुधैव कुटुम्बम की बात का अर्थ समझ में आया। इसके अलावा बच्चों की शिक्षा और विवाह जैसे आयोजनों में भी हम पूरी मदद करते हैं।

आगे क्या करने का विचार है आपका?

मेरा तो एक ही मकसद है ये प्राण जब तन से निकले तब भी मैं समाज सेवा या किसी व्यक्ति की मदद करते रहूँ बस इससे बड़ी खुशी कोई और नहीं।

सच है यह बात ....जब इंसान खुद का जीवन दूसरे के लिए समर्पित कर देता है तो ईश्वर भी उसके साथ खड़े हो जाते हैं। सपना गुप्ता इसकी एक बानगी है। आज हम सभीको उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम कुछ ऐसा कर चले कि यहां से जाने के बाद हम हंसे और जग रोए।

7 अक्टूबर को आयोजित अग्रसेन जयंती पर
रामचरण बंसल की मेरी निहारिका के लिए खास रिपोर्ट...

समाजवाद के अग्रदूत हैं महाराजा अग्रसेन

रामचरण बंसल
संस्थापक अध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य
इकाई, मुख्यालय: नागपुर

युगों युगों से भारत देश की इस महान धरा पर हमेशा किसी न किसी महान विभूति ने जन्म लिया है। त्रेता युग हो या सत्युग, द्वापर हो या कलयुग। ऐसी महान विभूतियों को सदियों तक याद किया जाता हैं। और जब तक सूरज, चांद, तारे और ये धरती रहेगी, उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा। ऐसी ही एक विभूति है... "महाराजा अग्रसेन"। लगभग 5144 साल पहले एक ऐसी ही महान विभूति ने भारत की धरा पर जन्म लिया। श्री अग्रसेन जी महाराज सभी वर्गों को संगठित कर युग प्रवर्तक अहिंसा के पुजारी, शांतिदूत और अग्रवाल समाज के संस्थापक के रूप में महाराज अग्रसेन के नाम से प्रसिद्ध हुए।

महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का अग्रदूत कहा जाता है। अपने क्षेत्र में सच्चे समाजवाद की स्थापना के लिए उन्होंने नियम बनाया था कि उनके नगर में बाहर से आकर बसने वाले प्रत्येक परिवार की सहायता के लिए नगर का प्रत्येक परिवार उसे एक रूपया व एक ईंट देगा। जिससे आने वाला परिवार स्वयं के लिए मकान व व्यापार का प्रबंध कर सके। महाराजा अग्रसेन ने शासन प्रणाली में एक नई व्यवस्था को जन्म दिया था। उन्होंने वैदिक सनातन आर्य सस्कृंति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य में कृषि-व्यापार, उद्योग, गौपालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की स्थापना की थी।

महाराजा अग्रसेन एक सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा थे। जिन्होंने प्रजा की भलाई के लिए वैश्य धर्म अपना लिया था। महाराज अग्रसेन ने नाग लोक के राजा कुमद के यहां आयोजित स्वंयवर में राजकुमारी माधवी का वरण किया। इस विवाह से नाग एवं आर्य कुल का नया

गठबंधन हुआ। महाराजा अग्रसेन समाजवाद के प्रर्वतक, युग पुरुष, राम राज्य के समर्थक एवं महादानी थे। माता लक्ष्मी की कृपा से श्री अग्रसेन के 18 पुत्र हुए। राजकुमार विभु उनमें सबसे बड़े थे। महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि यज्ञों में बैठे 18 गुरुओं के नाम पर ही अग्रवंश की स्थापना हुई। ऋषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ उनके द्वारा बसाई 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया। एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाए रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी अग्रवाल समाज में प्रचलित है। धार्मिक मान्यतानुसार मर्यादा पुरुषोतम भगवान श्रीराम की चौंतीसवीं पीढ़ी में सूर्यवशीं क्षत्रिय कुल के महाराजा वल्लभ सेन के घर में द्वापर के अंतिमकाल और कलियुग के प्रारंभ में अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को महाराजा अग्रसेन का जन्म हुआ। इस दिन को दुनिया भर में अग्रसेन जयंती के रूप में मनाया जाता है। राजा वल्लभ के अग्रसेन और शूरसेन नामक दो पुत्र हुए थे। अग्रसेन महाराज वल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र थे। महाराजा अग्रसेन के जन्म के समय गर्ग ऋषि ने महाराज वल्लभ से कहा था कि यह बालक बहुत बड़ा राजा बनेगा। इस के राज्य में एक नई शासन व्यवस्था उदय होगी और हजारों वर्ष बाद भी इनका नाम अमर होगा। उनके राज में कोई दुखी या लाचार नहीं था। बचपन से ही वे अपनी प्रजा में बहुत लोकप्रिय थे। वे एक धार्मिक, शांति प्रिय, प्रजा वत्सल, अहिंसा विरोधी, बली प्रथा को बंद करवाने वाले, करुणानिधि तथा सब जीवों से प्रेम, स्नेह रखने वाले दयालू राजा थे। उस समय यज्ञ में पशु बलि देने का प्रचलन था। जब महाराजा अग्रसेन जी यज्ञ करने लगे तो 17 यज्ञ में पशु बलि देखकर उनका हृदय चित्कार उठा। निरपराध और निरीह प्राणी की हत्या उन्हें पसंद नहीं आई। । 8वे यज्ञ में अग्रसेन महाराज ने पशु बलि देने से इंकार कर दिया। अन्य सभी राजाओं ने इसका विरोध किया। तब अग्रसेन महाराज ने कहा कि... "क्षत्रिय होकर पशु हिंसा मुझे मान्य नहीं है। इसीलिए आज से मैं और मेरे वंशज वैश्य धर्म का पालन करेंगे"। तब से खेती, गौपालन व्यापार को स्वीकार किया। हमारे अग्रसेन महाराज का क्षत्रिय होने पर भी वैश्य धर्म को स्वीकार करना एक बहुत बड़ा त्याग और जीवो के प्रति प्रेम को दर्शाता है। महाराजा वल्लभ के निधन के बाद अपने नए राज्य की स्थापना के लिए महाराज अग्रसेन ने अपनी रानी माधवी के साथ सारे भारतवर्ष का भ्रमण किया। इसी दौरान उन्हें एक जगह शेर तथा भेडिए के बच्चे एक साथ खेलते मिले। उन्हें लगा कि यह दैवीय संदेश है जो इस वीरभूमि पर उन्हें राज्य स्थापित करने का संकेत दे रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नए राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया, जिसे अग्रोहा नाम से जाना जाता है। वह जगह आज के हरियाणा के हिसार के पास है। आज भी यह स्थान अग्रहरि और अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ के समान है। यहां महाराज अग्रसेन और मां लक्ष्मी देवी का भव्य मंदिर है। अग्रसेनजी ने अपने छोटे भाई शूरसेन को प्रतापनगर का राजपाट सौंप दिया। महाराजा अग्रसेन अग्रवाल जाति के पितामह है। प्रेम सौहार्द एकता समता त्याग की मूर्ति अग्रसेन जी महाराज के हम वंशज है और इसी कारण हमारे वंश पर लक्ष्मी की कृपा निरंतर रहती है।

जयंती आई अग्रसेन जी की आज मेरे संग झूम लो तुम।
खुशी आई बहारों के साथ मेरे संग झूम लो तुम।

अग्रवाल समाज हमारा, सबसे लगता कितना प्यारा।
इस समाज ने दिया दुलार मेरे संग झूम लो तुम ।

अग्रोहा है गाँव पूर्वजों का। हमारे पूर्वज हमारे वंशज।
इस पूर्वज को शत-शत प्रणाम। मेरे संग झूम लो तुम।

आज नहीं कोई तन्हाई। हर तरफ खुशबू सी छाई। ये है
प्यार की अपनी पुकार। मेरे संग झूम लो तुम।

सारे जहाँ में खुशियाँ छाई, अग्रवालों ने जयंती मनाई।
और मनाया अपना यह त्यौहार। मेरे संग झूम लो तुम ।

हमारे पूर्वजों ने ये हमको सिखाया।
प्रेम और प्यार का दीप जलाया ।
इस दीपक की रखना है लाज। मेरे संग झूम लो तुम ।

अग्रसेनजी की आज है जयंती।
सबसे हमारी है यह विनती। आओ जी भूले द्वेष भाव।
मेरे संग झूम लो तुम।

- संपादक मेरी निहारिका

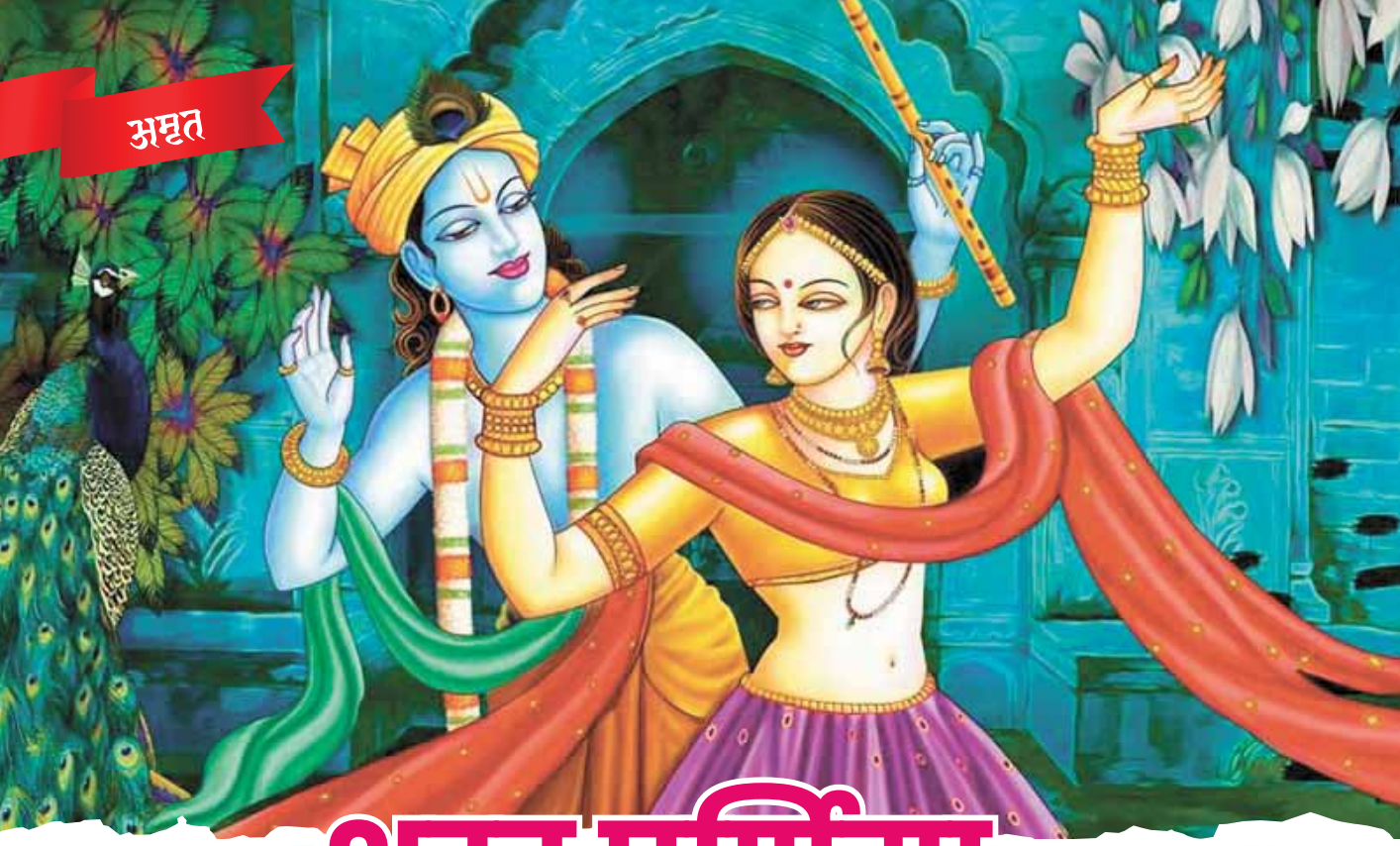

शरद पूर्णिमा...

विजया डालमिया
हैदराबाद

तुम्हारी आभा का क्या कहना!
ओ! शरद पूर्णिमा के शशि नवल!!
तुम्हारी आभा का क्या कहना!
ओ! शरद पूर्णिमा के शशि नवल!!
कौतूहल हो तुम सदियों से
श्वेत, शीतल, नूतन धवल!!!
तुमने रे! महारास को देखा
सुनी मुरली मधुर मोहन की,
कौन रे! महाबड़भागी तुम -सा?
तुम में सोलह -कला भुवन की ;
स्वर्ण - थाल सा रूप तुम्हारा -
अंबर का करता भाल उज्जवल!
ओ! शरद पूर्णिमा के शशि नवल!

शरद पूर्णिमा का चांद ! हल्के नीले रंग की रोशनी बिखेरते हुए। सब कुछ उजला उजला। आज अमृत रस बरस रहा है। शरद पूर्णिमा अर्थात रास पूर्णिमा महारास जो प्रेम का ही विशाल रूप है। वृंदावन का वंशीवट जैसा कोई वृक्ष नहीं, तभी तो मीरा ने अपने भजन में कहा है कि... "यमुना जी का तट हो। मेरा प्यारा वंशीवट हो। जब प्राण तन से निकले"। वंशीवट अर्थात भगवान के महारास की लीला भूमि। रासलीला कृष्ण की प्रेम क्रीड़ा का महोत्सव है। काम के देवता का घमंड चूर करने के लिए ही बांसुरी को माध्यम बना गोपियों के साथ रास रचाया। उस रात्रि को ब्रह्मा रात्रि के बराबर कर दिया। ब्रह्मा रात्रि अर्थात मनुष्य की करोड़ों रात्रि के बराबर। सारी रात रास चलता रहा। असंख्य गोपियां। असंख्य कृष्ण। बंसी के स्वर के अलावा और कोई आवाज नहीं। गोपियां उटपटांग सिंगार करके भागी चली आई रास रचाने। सर्व भूत मनोहर की बांसुरी की गूंज से भगवान शिव की समाधि भी भंग हो गई। वह भी इसमें शामिल होने चले आए। पर दरबान बनी गोपियों ने उन्हें बाहर ही रोक दिया। किंतु उनका दुखी चेहरा देखकर कहा... "आप यमुना जी के पास जाकर प्रार्थना करें।" देखें तो सही जो शिव खुद शीश पर गंगा धारण करते हैं। वह उस माधुर्य महारास में यमुना स्तुति के बाद ही सुंदर गोपी का स्वरुप बनकर गोपियों के मधुर्भाव की तरह ही रास में पधार सके। तभी से वे वृंदावन में गोपेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। जिस कृष्ण ने मोहिनी रूप बनाकर सभी को अमृत पान कराया, आज वही महारास के माध्यम से गोपियों की मनोकामना पूर्ण कर रहे हैं। राधा कृष्ण उज्जवल प्रेम के प्रतीक हैं। महारास के नायक कृष्ण। नायिका बनी शक्ति स्वरूपा राधा। और उनकी काव्य रूपा गोपियां। यहां स्त्रीत्व व पुरुषत्व दोनों ही नहीं है। लीला करने वाले श्याम आप्राकृत काम थे और अपनी इस लीला के द्वारा गोपियों को आप्राकृत विशुद्ध प्रेम अमृत का पान कराया। भगवान का ऐसा दिव्य स्वरूप जिसमें कामदेव भी मदमस्त हो गए। सारी रात रास चलने के बावजूद एक क्षण के लिए भी काम प्रवेश न कर सका। काम गंध शून्य रही। कामदेव का घमंड चूर चूर हो गया। प्रिया और प्रीतम के श्री चरण आज भी वृंदावन के वंशीवट में पाए जाते हैं। उनकी अष्ट सखियां उनकी निज सेवा में आज भी वहीं नजर आती है। शरद पूर्णिमा की रात चांद की किरणें अमृत बनकर बरसती है। जिंदगी में प्रेम अमृत ही तो है। प्रेम भाव में जीने वाला इस अमृत का पान कर लेता है व अमर हो जाता है। प्रेम यानी दीवानगी। प्रेम यानी पागलपन। प्रेम यानी तर्कों से बाहर हो जाना। प्रेम यानी बुद्धि की सीमा से परे हो जाना। साधारण प्रेम ही जब दीवाना बना देता है तो उस परमात्मा के प्रेम की तो बात ही निराली है। जहां प्रेम है, वहां सदा ही शरद चांदनी अमृत हर पल बरसा रही है।

ऋतु गुप्ता
बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

अपनेपन की महक...

कुछ समय बाद घर के मुहूर्त पर जब बुआ घर आई, तो सबसे ज्यादा खुश आज मंजुला बुआ ही थी, क्योंकि आज भी उन्हें इस घर में अपनेपन की महक जो आ रही थी, और अपने कमरे से जुड़े पूजा घर में उन्हें मां बाबूजी के होने का एहसास आज भी हो रहा था।

सोमेश ने घर में घुसते ही सभी को आवाज लगाई, चलो सभी सुगंधा (सोमेश की पत्नी) नितिन (बेटा) नीति (बेटी) जल्दी इधर आ जाओ। नए घर का नक्शा बनकर आ गया है, जिसको जो भी चेंज कराने हो अभी बता देना, एक बार नक्शा फाइनल हो गया तो फिर कुछ नहीं हो सकता।

सोमेश अपने पुराने घर को फिर से तुड़वा कर नए अंदाज में नया घर बनवाना चाहता था, क्योंकि घर काफी पुराना हो गया था और मरम्मत मांग रहा था, और बच्चे भी बड़े हो रहे थे, तो उनके हिसाब से भी घर को सेट कर आना था।

सुगंधा ने रसोई से आवाज लगाई आप तीनों देखिए, मैं अभी दस मिनट में आती हूं। नितिन और नीति बहुत खुश थे अपने बड़े-बड़े कमरों का नक्शे को देखकर, चहक रहे थे। नीति ने कहा, पापा मुझे यहां स्टडी टेबल लगवाना है, तो नितिन ने कहा मुझे म्यूजिक सिस्टम के लिए बड़ी जगह चाहिए, इसी तरह दोनों अपनी फरमाइश अपने पापा को बताने लगे।

पुराने घर मे पांच कमरे थे, जिनकी जगह अब नक्शे मे चार बड़े कमरे थे। उस नक्शे मे, एक कमरा सोमेश- सुगंधा का, एक नीति का, एक नितिन का, और एक गेस्ट रूम।

इतने में ही सुगंधा आती है और नक्शा देखती है सोमेश और बच्चों से कहती है इसमें एक सदस्य का कमरा तो है ही नहीं सभी उसकी तरफ आश्चर्य से देखते हैं। बच्चों ने कहा किसका कमरा नहीं है मां?

सुगंधा ने कहा तुम्हारी मंजुला बुआ भी तो इस घर की सदस्य हैं, मां बाबूजी के बाद उन्हें ऐसा कतई नहीं लगना चाहिए कि वह इस घर की सदस्य नहीं है...

पर मां गेस्ट रूम तो है ना बुआ के लिए, नीति ने कहा...

सुगंधा बोली क्या तुम चाहोगी कि शादी के बाद तुम्हें भी इस घर में गेस्ट समझा जाए, बेटियां कभी पराई नहीं होती, उन्हें शादी के बाद भी इतना ही अपनापन वह सम्मान मिलना चाहिए, जितना की शादी से पहले, सुगंधा ने प्यार से दोनों बच्चों को समझाया। इतना सुनकर सभी चुप हो गये...

सोमेश ने सभी की चुप्पी तोड़ते हुए कहा, तुम्हारी मां सही कहती है, बुआ भी इसी घर की सदस्य है, और हमें रिश्तो का सम्मान करना चाहिए।

फिर क्या था, सभी ने नए सिरे से अपने कमरे थोड़े छोटे-छोटे कर बुआ की कमरे की भी जगह निकाल ली और और साथ ही बुआ के कमरे के साथ एक छोटे से, प्यारे से, पूजा घर की भी जगह निकाल ली, जो ठीक मां बाबूजी जी के कमरे की जगह पर ही था।

कुछ समय बाद घर के मुहूर्त पर जब बुआ घर आई, तो सबसे ज्यादा खुश आज मंजुला बुआ ही थी, क्योंकि आज भी उन्हें इस घर में अपनेपन की महक जो आ रही थी, और अपने कमरे से जुड़े पूजा घर में उन्हें मां बाबूजी के होने का एहसास आज भी हो रहा था।

ज्वर या बुखार कभी अनदेखा न करें...

डॉ. मधु अग्रवाल
एमडी होम्योपैथी
गोल्ड मेडलिस्ट

बुखार अपने आप में कोई रोग नहीं है, यह अंदरूनी अनेक विकारों का प्रभाव है। कोई भी इन्फेक्शन आने से पहले शरीर संकेत देता है बुखार के रूप में कि कहीं कुछ गड़बड़ है और हमें सावधान हो जाना चाहिए। इन दिनों वायरल बुखार, डेंगू का बुखार, मौसमी बुखार काफी फैला हुआ है। निम्नलिखित कुछ उपयोगी दवाइयां जिसे आप जरूरत पड़ने पर उपयोग कर सकते हैं।

डेंगू ज्वर... इसमें शरीर का तापमान 103 - 104 डिग्री तक जा पहुंचता है। शरीर पर छोटे-छोटे लाल दाने निकलते हैं तथा हड्डियों एवं जोड़ों में तीव्र वेदना होती है। इसे हड्डी तोड़ बुखार भी कहते हैं।

यूपाटोरियम पर 200

किसी भी प्रकार के बुखार में यदि हड्डियों में अत्यधिक दर्द, वेदना, बेचैनी, महसूस होती है। हड्डी में असहनीय दर्द। जैसे हड्डी टूट कर गिर जाएगी। थोड़ी-सी हलचल से भी तकलीफ का बढ़ना। ठंडे पानी की इच्छा। बुखार आने के पहले यह सभी लक्षण पाए जाने पर इस दवा का सेवन रोगी को कराने से अति शीघ्र लाभ होता है।

एकोनाइट नेकलेस 200

बुखार की प्रथम अवस्था में इसे दिया जाता है। इसका रोगी अत्यधिक बेचैन, चिंतित डरा हुआ। बार-बार ठंड लगना और शरीर गर्म होने के बाद पसीना आना। इसका ज्वर पसीना आने के बाद उतर जाता है। रोगी को अत्यधिक पानी की प्यास लगना जो पानी पीने के बाद भी नहीं बुझती है।

जेल से नियम 200

बुखार धीरे-धीरे आता है। बुखार के साथ अत्यधिक सुस्ती, पेशियों की दुर्बलता और पूर्ण विश्राम की इच्छा। दिनभर मरीज को लगता है लेट कर बिस्तर में पड़े रहो। इसके रोगी को ज्वर के साथ प्यास का अभाव रहता है। आंखों में, सर में अत्यधिक भारीपन के लक्षण के साथ डलनेस महसूस करता है।

ब्रायोनिया अल्बा 200

बुखार में भी रोगी अपने धंधे या काम के बारे में ही बातें करता है। एक बार में ही ज्यादा पानी पिएगा लेकिन लंबे अंतराल से और बुखार के साथ कब्ज व सर दर्द की शिकायत ज्यादा रहेगी।

गर्मी ज्यादा महसूस होती है, ठंडी हवा पसंद आती है। जबान सूखी और सफेद परत दिखती है।

रस टॉक्स 200

शरीर पर दाने, लाल चकत्ते उभरना सारे शरीर पर। विशेषकर टांगों में पीड़ा। मांसपेशियों में अत्यधिक दर्द। रोगी बेचैन हो जाता है दर्द के कारण बार-बार करवटें बदलता है। उठकर घूमने की कोशिश करता है। बारिश में भीगने के बाद ज्वर आने पर इसे दे सकते हैं। इसे रोगी की जीभ की नोक पर लाल तिकोना निशान प्रतीत होने पर दे।

नोट!!!

होम्योपैथी में किसी रोग की कोई निश्चित औषध नहीं होती, रोग के लक्षणों में परिवर्तन आते ही औषध में भी परिवर्तन करना आवश्यक होता है इसी कारण इसे "लाक्षणिक चिकित्सा पद्धति" भी कहा जाता है। मरीज के गुणधर्म से औषधि का गुणधर्म मिलने पर दवा का चयन किया जाता है।

भारतीय बेटी की पहल

12 घंटे में लगे 1 लाख 31 हजार पौधे

ओमान से भारत की बेटी मीनल और उनके साथ अन्य भारतीयों ने एक मुहिम छेड़ा तो 12 घंटे में 1 लाख 31 हजार पौधे लग गए। यह शायद एक भारतीय नारी की शक्ति का ही प्रतीक है। भारत की बेटी जब कुछ ठान लेती है तो सब कुछ कर जाती है।

भौतिक विकास के पीछे दौड़ रही दुनिया ने आज जरा ठहरकर साँस ली तो उसे अहसास हुआ कि चमक-दमक के फेर में क्या कीमत चुकाई जा रही है। आज ऐसा कोई देश नहीं है जो पर्यावरण संकट पर मंथन नहीं कर रहा हो। कोरोना ने पूरे विश्व को चिंतित कर दिया। पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। पेड़ काटकर जंगल के कांक्रीट खड़े करते समय उन्हें अंदाजा नहीं था कि इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे?

प्रकृति को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए पश्चिम में मजबूत परंपराएं भी नहीं थीं। प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि को छोड़कर कहीं और देखने में नहीं आता है। जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद हैं। ऐसे में ओमान से भारत की बेटी मीनल और उनके साथ अन्य भारतीयों ने एक मुहिम छेड़ा तो 12 घंटे में 1 लाख 31 हजार पौधे लग गए। यह शायद एक भारतीय नारी की शक्ति का ही प्रतीक है। भारत की बेटी जब कुछ ठान लेती है तो सब कुछ कर जाती है।

मीनल देवड़ा राजस्थान के जिले झुंझुनू से जुड़ी हैं। मीनल मुंबई में पली-बढ़ी हैं और 2008 से वे ओमान में है। जैसे ही करोना शुरू हुआ और ऑक्सीजन के लिए लोगों को दर-दर भटकते देखा तो पर्यावरण की अहमियत समझ में आई। तभी बड़े बुजुर्गों की बात भी याद आई कि ... 'पेड़ मत काटो' प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का नतीजा इस रूप में भुगतना पड़ेगा यह किसी ने भी नहीं सोचा था। बस तब से ही वे जुट गई। पर्यावरण दिवस पर शपथ ग्रहण की और एक महीने के टाइम में लिए संकल्प और सपने को साकार करने के लिए फुलप्रूफ प्लानिंग करनी शुरू कर दी। शुरू में 1 लाख 13,000 का टारगेट था। पर बाद में वे लोग 1,30000 पौधे लगाने में सफल हो गए। उन्होंने, समृद्धि चौधरी और स्मृति चौधरी जो यूपी सहारनपुर से है,पूरी प्लानिंग की और टीम वर्क सफल रहा। उनका यही मकसद था कि इससे अगर कुछ लोग भी प्रेरित होते हैं तो हमारा यह करना सार्थक हो जाता है। उन्होंने पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में वृक्षारोपण किए। जिसमें सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में नाना पाटिल ने बहुत मेहनत की।

मीनलजी ने बताया कि आउट ऑफ इंडिया में जो स्कूल है वहां पर हमने तरह-तरह के फूलों के प्लांट लगाए और एक स्कूल में तो हमने बच्चों के हाथ से पौधे लगवाए। उन प्लांट्स को हमने बच्चों का नाम दे दिया तथा उन्हें संभालने की जिम्मेदारी भी बच्चों को ही दे दी,ताकि वह बराबर उन्हें पानी देते रहे। इसी तरह उन्होंने जहां जहां वृक्षारोपण किए हैं, उनके मेंटेनेंस के लिए वह बहुत जागरूक रहते हैं। वे थोड़े थोड़े दिनों में जानकारी के लिए फोटो मंगवाते हैं,ताकि यह देख सके कि सबकी बराबर देखभाल की जा रही है या नहीं। वे सब लोगों का रिकॉर्ड रखते हैं जिन्होंने भी वृक्षारोपण में सहयोग दिया है। उनका कहना है कि 500 लोगों की मेहनत का फल है यह वृक्षारोपण अभियान, जो टीमवर्क से ही संभव हो पाया। उन्होंने सम्मान पत्र भी सबको दिए हैं। मीनलजी ने बताया कि ओमान में पानी बहुत महँगा है। इसलिए लोग प्लांट्स नहीं लगाते। चूंकि उन्हें शुरू से ही प्रकृति से प्रेम था, तो उन्होंने अपने घर के चारों तरफ 100 से भी ज्यादा तुलसी के पौधे लगाकर मिनी वृंदावन बना रखा है। मीनल जी का 'मेरी आवाज' एक मीडिया चैनल है। यह 33 देशों में चलता है। जिसमें भारतीयों के लिए फरमाइशी गीतों का प्रोग्राम तथा इंटरव्यू प्रसारित किए जाते हैं। **जैसा उन्होंने ओमान से मेरी निहारिका टीम को बताया।**

चिट्ठी आई है, आई है चिट्ठी आई है...

कहते हैं न बात चलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी। अनंत जी की बातें भी अनंत है। आज उस अनंत कथा से कुछ छोटी से कहानी अनंत जी की जुबानी।

विजया डालमिया
संपादक, मेरी निहारिका

पंकज उदास की गजल चिट्ठी आई है, आई है, चिट्ठी आई है। यह सिर्फ एक गजल नहीं इमोशन है। हिंदुस्तान की दहलीज से बाहर सात समुंदर पार रोजगार या बिजनेस की तलाश में दूसरे मुल्कों में रहने वाले इस गजल को सुनते ही अपनी मां और मातृभूमि की याद में तड़प उठते हैं। फिर उन्हें यह महसूस होता है कि जिस मां ने मुझे जन्म दिया। जिस मातृभूमि की मिट्टी में मैं पला, मुझे वापस वहीं लौट चलना चाहिए। अपने मुल्क के लिए अपने घर के लिए और अपनी खुद की खुशी के लिए। यह हर भारतीय की तमन्ना होती है।

आज की शख्सियत कालम में हम ऐसे ही व्यक्तित्व से आपको मिलाने जा रहे हैं, जो सात समुंदर पार नौकरी कर रहे थे। खूब पैसा कमाया और शोहरत भी। अचानक एक दिन उन्होंने फैसला किया कि मुझे अपनी मातृभमि की सेवा करनी है। लौट पड़े करोड़ों रुपए की नौकरी छोड़कर अपने मुल्क। नौकरी के दौरान उन्होंने जो कुछ सीखा, समझा, जाना उस अनुभव को यहां लगा डाला। उनका जज्बा, जुनून और जिद ने आज उन्हें इस मुकाम पर खड़ा कर दिया कि आने वाले सालों में वे खुद आई टी की क्षेत्र में देश विदेश में अपना परचम फैलाएंगे। जी हां... हम बात कर रहे हैं..." अनंत अग्रवाल जी" की। 15 साल विदेशों में नौकरी करने के बाद उनका मन बदला और वह अपनी मातृभूमि पर लौट आए। आज मुंबई में उनकी "स्किल माइन टेक्नोलॉजी कंसलटिंग प्राइवेट लिमिटेड" नाम की आईटी कंपनी है। जिसे पूरे देश में करीब तीन हजार लोगों को रोजगार मिला हुआ है। इसी महीने उन्होंने अपना 50वां वर्षगांठ मनाया और कहा... मैं कहीं भी रहा अपने वतन की मिट्टी को न भूल सका। इस माटी की सुंगध मुझे यहां तक खींच कर ले आई। मैं आज बहुत खुश हूं। कैसा रहा उनके जीवन का अब तक का सफर? खुली आंखों से वे अब क्या सपना देख रहे हैं? उसे पूरा करने के लिए उनके पास क्या कार्ययोजना है? इन सब विषयों पर मेरी निहारिका ने जब उनसे बात की तो वे भाव विभोर हो गए।

कहते हैं न बात चलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी। अनंत जी की

बातें भी अनंत है। आज उस अनंत कथा से कुछ छोटी से कहानी अनंत जी की जुबानी।

बिजनेस करने से पहले मैं काफी अच्छे पदों पर रहा हूँ और उसमें मुझे कभी कोई दिक्कत नहीं रही। मगर हमेशा से मेरे मन में समाज और देश के लिए कुछ करने की ख्वाईश थी। मैं स्वचंछद रूप से काम करना चाहता था मेरी महत्वाकांक्षाओं और देश और समाज के लिए। इसलिए मैंने खुद के रोजगार के लिए सोचा। मेरी सोच में देश का आर्थिक विकास, युवाओं को रोजगार और सबसे बड़ी बात देश की प्रतिभाओं को बाहर जाने से रोकना। यह मेरा मिशन इंडिया है।

भारत आई टी के क्षेत्र में अपना एक मुकाम बना चुका है। हमारे देश में भी आईटी की कई कम्पनियां है। मैंने भी 25 साल तक आई टी के क्षेत्र में बड़ी बड़ी मल्टी कंपनियों में काम किया। अच्छा पैसा था। सारी सुख सुविधाएं, लेकिन मन को सुकून नहीं। कुछ न कुछ गैप दिखा। मैंने उस गैप को समझा और उस रिक्त स्थान को भरने के लिए मैंने काम किया।

हिंदुस्तान में साइबर सिक्योरिटी बहुत बड़ी समस्या थी। इसमें मैंने पहले चरण में काम किया। मुझे भारतीय सेना के शॉर्ट सर्विस कमीशन के सेवा निवृत्त लोगों का बड़ा सहयोग मिला, जिससे हम आज इस फील्ड में कामयाब रहें।

किसी भी व्यवसाय में दिक्कत तो होती ही है। पहले तो उपभोक्ता आपको एक्सेप्ट नहीं करते। हमें भीड़ में अपनी अलग पहचान बनानी होती है।

दूसरी टेलेंट की कमी। लोग नए कंपनियों में आने से डरते हैं। इसके अलावा फंड। यह समस्याएं समय के साथ खत्म हो चुकी है। अब हम ग्रोथ पर है। मुझे यह खुशी है कि मैं अपनी टीम के साथ आगे बढ़ रहा हूं। मैं भी 365 दिन 12 घंटे काम करता हूँ। इससे मुझे आत्मसंतुष्टि मिलती है। मैं हमेशा यह तय करता हूं कि मुझे आज क्या हासिल करना है? और उसे पूरा करके ही छोड़ ता हूँ। कहते भी हैं... "खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा खुद बंदे से ये पूछे बता तेरी रजा क्या है"। मैं अभी 20 मिलियन डॉलर की कंपनी को बहुत आगे ले जाना चाहता हूं। मैं इसे नंबर वन बनाना चाहता हूँ।

हर आदमी बिजनेस अपने नेचर और संस्कार से करता है। सबसे ज्यादा सुकून इसमें मिलता है कि ईश्वर ने हमें जो पावर दिया है उसे हम अपनी काबिलियत को समझ कर इस्तेमाल कर सकते हैं। हमारी पूरी टीम का लक्ष्य है ..."हम होंगे कामयाब"। हमारी टीम के सदस्य इसे अपनी ही कंपनी मानते हैं। हमारी कंपनी में यूथ ही है। 700 लोगों की टीम में करीब 500 लोग 30 साल की उम्र के और दो सौ 25 साल की उम्र के हैं। मुझे गर्व है कि मेरी कंपनी युवाओं के हाथ में है और वे इसे सही दिशा में ले जायेंगे। शायद मैं ही अकेला यहाँ सबसे बड़ी उम्र का हूँ। मैं इसे एक बिलियन डालर की कंपनी बनाना चाहता हूँ। 22 में हम जापान में और यूरोप में काम करने जाएंगे। अभी हम भारत में यूएस और यूके में काम कर रहें हैं। हम गुणवत्ता से समझौता नहीं कर सकते। मैं स्किल माइन एकेडमी बनाना चाहता हूँ। यह

> युवाओं को कहना चाहता हूँ कि उन्हें जो मिला है वह उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद कहें और अनुशासन व ईमानदारी को अपना लक्ष्य बनाएँ। जल्दी सोकर जल्दी उठने की आदत को जीवन में ढालें।

रायपुर में खोलकर हर साल 1000 युवाओं को इंजीनियर बनाकर उन्हें देश के लिए तैयार करना चाहता हूँ। युवाओं को कहना चाहता हूँ कि उन्हें जो मिला है वह उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद कहें और अनुशासन व ईमानदारी को अपना लक्ष्य बनाएँ। जल्दी सोकर जल्दी उठने की आदत को जीवन में ढालें। इनफोसिस एक अच्छा उदाहरण है। हम बराबर मिलते रहते हैं और कई बार चर्चायें भी होते रहती है। जिंदगी में कई मॉडल बनते हैं। हमें उनसे सीख जरूर लेना चाहिए। काम की प्राथमिकता के साथ मौज मस्ती करना भी जरूरी है। मैं सभी को यह सलाह दूँगा कि साल में आप अपने परिवार के साथ छुट्टियाँ जरुर बितायें। अपने परिवार को हमेशा साथ रखें और माता पिता को कभी न अलग होने दें। यह मेरी सलाह है। उनका सम्मान करोंगे तो कुछ मिलेगा ही और जो मिलेगा वह भूल नहीं पाओगे। उन्होंने कहा हमें लिमिटेड टाइम में से मौके पैदा करना है ताकि हम परिवार के साथ तालमेल बराबर बैठा सकें। उन्होंने सरलता के साथ काम करने में विश्वास जताया। उनका मानना है कि जो जितना सरल होता है वह उतना ही हल्के रॉकेट की तरह ऊपर उठता है। तो आपने जाना अनंत अग्रवाल की कामयाबी का रहस्य। उन्हें सुनकर और समझकर यूनुस गाजी की यह लाइन बरबस याद आ जाती है

दौलत शोहरत आनी जानी फिर इस पर इतराना क्या?
पानी पर ये नाम लिखा हो ऐसा भी हो सकता है।

लघुकथा

शक्ति स्वरूपा...

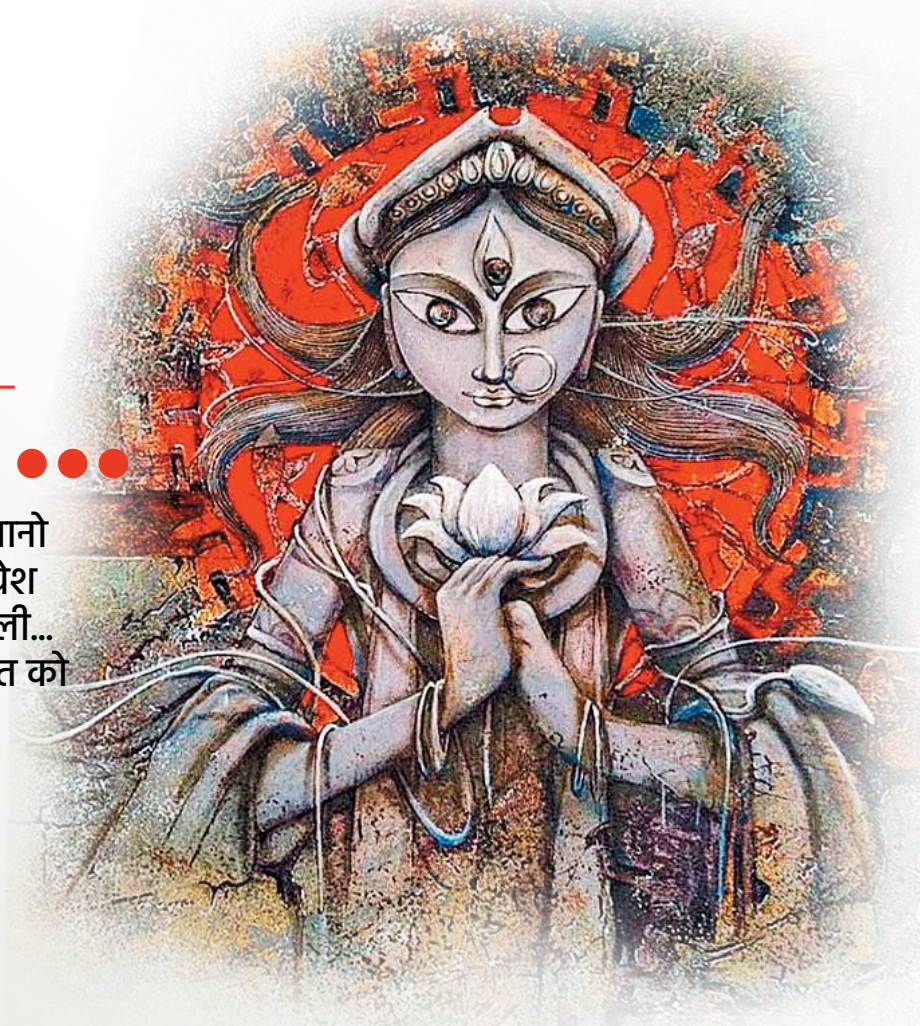

आज उसके भीतर मानो साक्षात चंडिका प्रवेश कर गईं... वो दहाड़ते हुए बोली... खबरदार अमित बाबू... अमित को ऐसी उम्मीद न थी...

मीनाक्षी मोहन 'मीता'
पंचकूला, हरियाणा

"मैं इसे अब इस घर में नही देख सकती"... नेहा को घूरते हुए उसकी सास माँ सुभद्रा देवी आंखों से ज़हर उगलती बोली... "इसके भिखारी बाप ने खाली हाथ ही ब्याह दिया... इतने करोड़पतियों के रिश्ते आ रहे थे... ये करमजली ही हमारी किस्मत में लिखी थी...

मुझे लगा था कि इसका बाप कुछ तो बिना मांगे दे ही देगा... पर इतना बेशर्म बाप नही देखा"...

"माँ जी उन्होंने अपनी सारी कमाई विवाह में लगा दी... एक बाइक भी दे दी अमित को... दीदी और आपको गहने भी दिये... आप फिर भी उन्हें बुरा भला कहते है"... नेहा ने थोड़ा दबी ज़बान में कहा... सुभद्रा का गुस्सा तो मानो सातवें आसमान पर पहुंच गया... वो दहाड़ती हुई अपने बेटे से बोलीं- "देखा अमित, कितनी बदतमीज़ होती जा रही है ये बेशर्म"... अमित ने भी आव देखा न ताव और नेहा को दो तमाचे जड़ते हुए कहा... "शर्म नही आती मेरी माँ से जुबान लड़ाते... वो सही ही तो कह रही हैं... इकलौती बेटी हो एक कार, और फ्लैट भी दे देते तो क्या जाता उनका... इतना कुछ है उनके पास"

अमित तुम जानते हो पापा ने मेरी दो बुआ का भी कन्यादान किया... अपने सामर्थ्य से बढ़ कर किया...

अब माँ कैंसर से जूझ रही हैं... पैसा पानी की तरह जा रहा है... आप फिर भी ऐसा कह रहे हैं।

हमेशा चुप रहने वाली नेहा में इस बार न जाने कहाँ से इतनी हिम्मत आ गयी थी...

पर अमित तो... उस पर जैसे शैतान सवार हो गया... उसने नेहा के बाल खींचते हुए उस पर घूंसे बरसाने शुरू कर दिये... "आज इसका काम तमाम कर दे... बेटा... बड़ी जुबान निकल आयी इसकी... कह देंगे रसोई में काम कर रही थी सिलेंडर लीक कर गया"-बेटे को उकसाती हुई सुभद्रा ने कहा। अमित उसे पीटने लगा और घसीट कर रसोई की तरफ ले जाने लगा... पर ये क्या? तभी दहाड़ती ही भागो बीच में आ गयी... रोज़ उनका तमाशा देखती थी कि रोज़ नेहा की सास किसी न किसी बात पर बखेड़ा कर अमित को उकसाती थी... भागो यानी भागवंती पिछले 3 साल से अमित की दादी का ख्याल रखती थी... क्योंकि सुभद्रा देवी तो अपनी सास की सेवा करती नही थी... भागो उनके यहां काम कर रही थी...

भागो आंगन में बैठ कर साग काट रही थी... उसके हाथ में दराती तो थी ही... और आज उसके भीतर मानो साक्षात चंडिका प्रवेश कर गईं... वो दहाड़ते हुए बोली... खबरदार अमित बाबू... अमित को ऐसी उम्मीद न थी... जानवरो को उन्हीं की भाषा में समझाना जरूरी है बेटे... भागो ने नेहा को गले लगाते हुए कहा... तू डर मती... मैं देखती ये कैसे तेरा बाल भी बांका करते... तू पुलिस को फोन लगा बेटा... इनके पाप का घड़ा अब भर गया... आज इन्हें न छोड़ना...

सुभद्रा और अमित को जैसे साँप सूंघ गया था... शक्ति स्वरूपा भागो को देख कर...!!!

सुंदर फूलदान

आरती 'आरज़ू'

हम सभी के घरों में अक्सर स्वेटर बनाने के बाद अक्सर थोड़ी बहुत ऊन बची रह जाती है। बहुत ही आसान तरीक़ों से, आप ऊन या धागों से फूलदान या सुंदर गमले तैयार कर सकते हैं। अभी तो त्योहारों का मौसम है, बच्चों की छुट्टियाँ भी होंगी तो चलिए लगा दीजिए अपने बच्चों को काम पर और उनकी और अपनी कलात्मकता को निखारते हुए, चलिए बनाते हैं ये आसान से फूलदान।

सामग्री:

- रंग बिरंगी बची हुई ऊन या मोटे धागे
- पुरानी ख़ाली प्लास्टिक या काँच की बोतल या फिर रसगुल्लों के टीन वाले छोटे डिब्बे
- बड़े सितारे या रंग बिरंगे बटन
- गोंद या फ़ेविकोल

बनाने का तरीक़ा:

- काँच या प्लास्टिक की बोतल लीजिए, इसके ऊपरी किनारे से लेकर थोड़ा नीचे तक फ़ेविकोल लगाइए।
- ऊन को फ़ेविकोल पर चिपकाते हुए, बोतल पर गोल-गोल लपेटते जाइए।
- इसी तरीक़े से थोड़ी-थोड़ी जगह पर एविकोल लगते हुए पूरी बोतल पर ऊन लपेट दीजिए।
- ध्यान रखें कि एकसाथ पूरी बोतल पर फ़ेविकोल नहीं लगाना है, वर्ना आप के हाथ गंदे होंगे और फ़ेविकोल के सूख जाने से ऊन भी सही तरीक़े से नहीं चिपकेगी।
- आप चाहे तो एक ही रंग की ऊन इस्तेमाल कर सकते है या फिर अलग-अलग रंगो की भी।
- दूसरी ऊन लगते वक़्त थोड़ा-सा ऊन नीचे की तरफ़ रख कर तब लपेटना शुरू करें इससे जोड़ भी नहीं दिखेगा और ऊन जल्दी निकलेगी भी नहीं।
- ऊन के आख़िरी सिरे को भी इसी तरह ऊपर की ऊन के अंदर की तरफ़ रखते हुए चिपकाइये।
- पूरी बोतल पर ऊन लपेटने के बाद थोड़ी देर सूखने के लिए रख दीजिए। सूखने के बाद इसपर फ़ेविकोल की सहायता से सितारें या बटन चिपकाइये।
- आपका फूलदान या गुलदस्ता तैयार हैं, इसे ताज़ा या फिर नक़ली फूलों से सजाइए।
- छोटे तीन के डिब्बों को भी इसी तरह से सजाकर छोटें गमले तैयार कीजिए और लगाइए उसमें मनपसंद फूलों के पौधे।

चंद्रगुप्त तुम बनो...

विद्या वैभव भारद्वाज

चंद्रगुप्त तुम बनो, पाटलिपुत्र के नायक।
देता हूँ गुरुमंत्र, इन्हें तुम भूल न जाना।
धीर, धृति धारणकर, धर्म निभाना होगा।
प्रजापति बनकर किंचित, अभिमान न करना।

मूल जीवित रखता है, हर पत्ती, डाली को।
फल की लालसा में समूल, अवसान न करना।
चंद्रगुप्त तुम बनो, सुशासन के उन्नायक।
जो भी हो संभव हित, उन सबको अपनाना।

मिले न्याय, सम्मान जो, याचक बनकर आयें।
बनो सूर्य -सा जो प्रकाश, भर दे घर-घर में।
तुम उनके साथी हो, यह विश्वास जगाओ।
सुख में साथ रहो न, रहो दुःख के अवसर में।

चंद्रगुप्त तुम बनो, दुःखीजन के सुखदायक।
सुख हो या दुःख हो, अपना कर्तव्य निभाना।
जैसे इस धरती से जल, लेता है दिनकर।
जैसे फूल कोई चुन ले, जाए मधुबन से।

वैसे ही कर लेकर, जनता को यूँ देना।
जैसे पूरी धरा, भीग जाती सावन से।
चंद्रगुप्त जब बनो, प्रजाहित के निर्णायक।
घनानंद के अपकर्मों को, मत दुहराना।

यादें...

सपना चन्द्रा
कहलगाँव भागलपुर, बिहार

यादें विस्मृत मन की परत-सी होती हैं..
पन्ने दर पन्ने अचानक किताब बन जाती हैं।
कभी अधजली, कभी तीक्ष्ण गंध-सी छूने लगती हैं।
उमड़ते-घुमड़ते चलचित्र चल पड़ते हैं, बिना रोक टोक के,
कई सवाल कौंध उठते हैं मानस पटल पर,
क्या रह गया इन जीवन के उलझी लताओं में,
कहाँ ठहर गया तैरती हुई यादों के जखीरे में,
सलवटें पड़ कर चिढ़ा रही थी कंपित यादें।
जीवन में क्या पाया और खोया? ?
कई मोड़ से गुजरते हुए मन का वह घुमावदार रास्ता...
मन की तलहटी में बैठी कुछ कड़वी-सी,
होठों पर तैरती कभी मंद मुस्कान-सी,
आँखों में झिलमिलाती आँसू नीर-सी
चेहरे पर तैरती भोर की रक्तिम आभा-सी
बहती हुई कलकल नदी की धार-सी
जल में तैरती कागज के नाव-सी छोड़ आते है!!!
चुभते तलछट को...
बढ़ जाते है एक नई आशा की ओर...
प्रतिक्षण उलझाते उन्माद को...
लेखा-जोखा से परे हटकर...
चलो चलते है विराम देकर...
जीवन के उस पार जाकर...
सारी चिंताओं से मुक्त होकर...
चलो चलते है, चलो चलते हैं।

प्रसन्नवदना...

समीर उपाध्याय
जिला सुरेन्द्रनगर, गुजरात

मैं भारतवर्ष की आदर्श गृहिणी हूं।
सदा प्रसन्नवदना रहती हूं।
जहां में खुशियां बांटती हूं।

पति की पथगामिनी बनती हूं।
सद्विचारों का सम्मान करती हूं।
हमसफ़र की ताकत बनती हूं।
जीवनसफ़र सुगम बनाती हूं।

सुर में सुर को मिलाती हूं।
जीवन को उत्सव मनाती हूं।
घर-द्वार को खुला रखती हूं।
अतिथि का सत्कार करती हूं।

कोख से रत्न पैदा करती हूं।
ममता की मूरत बनती हूं।
ससुर की सुश्रुषा करती हूं।
सास की लाड़ली बनती हूं।

जेठ की मर्यादा रखती हूं।
देवर की दुलारी बनती हूं।
परायों को अपना बनाती हूं।
भावना की सरिता बहाती हूं।

रसना पर काबू रखती हूं।
सदा अपनापन जताती हूं।
मितभाषी बनकर रहती हूं।
शब्दमाधुरी परोसती हूं।

तर्क-वितर्क से दूर रहती हूं।
आपदाओं को हल करती हूं।
प्रेम की भागीरथी बहाती हूं।
अमृत का प्याला पिलाती हूं।

सुख में संयम रखती हूं।
दुःख में हंसती रहती हूं।
सेवायज्ञ की समिधा बनती हूं।
कर्मों की खुशबू फैलाती हूं।

षडरिपु का हनन करती हूं।
तेज का पुंज फैलाती हूं।
दिल में ज्योत जलाती हूं।
घर को जन्नत बनाती हूं।

कुल का गौरव बढाती हूं।
विजय केतन फहराती हूं।
मैं भारतवर्ष की आदर्श गृहिणी हूं।
सदा प्रसन्नवदना रहती हूं।
सदा प्रसन्नवदना रहती हूं।

लघु कथा

शौक

अर्पिता वैद्य
पुणे

सुबह की चाय पी के बस नाश्ता बनाने की तैयारी में लगी ही थी कि डोरबेल बजी... मेरे पड़ोसी के घर काम करने वाली सरिता दीदी थी।

"अरे... सरिता दीदी" मैंने पूछा,

सरिता -"दीदी कुछ कहना चाह रही थी, मैं आपसे बड़े दिनों से" मैंने पूछा, "हाँ... बोलो??"

सरिता -"वो दीदी, बुरा मत मानिएगा... आपकी बेटी के कपड़े जो नहीं पहनने के हो यानि जो वो नहीं पहनती वो आप मुझे दे सकते हो क्या...? ?"

मैं -"बेटी के छोटे हुए कपड़े दे सकती हूँ, कोई है तुम्हारी पहचान में जिसको जरूरत हैं??"

सरिता -"नहीं छोटे नहीं... अभी के ..जो वो ज्यादा नहीं पहनती हो... हाँ वो... मेरी बेटी के लिए ही मांग रही थी आपकी परी की ही उम्र की है मेरी मीनू"

मैं -"लेकिन वो मैं ऐसे कैसे?? देखना पड़ेगा कि हैं भी कि नहीं... बताती हूँ फिर कुछ निकले तो..."

सरिता -"अरे... दीदी कोई जल्दी नहीं है... बस दिवाली से पहले... मतलब दिवाली की सफाई के वक़्त बिटिया के जो कपड़े निकालोगी... वो मुझे दे देना... मेरी मीनू के लिए,

वो कभी कभी मेरे साथ आती है यहां काम पर... जब भी परी बिटिया के कपड़े देखती है तो मुझसे वैसे ही कपड़ों की जिद करती है... उसको टालने के लिए बोल दी हूँ कि दिवाली पर लाऊंगी वैसे कपड़े... बस इसीलिए..."

मैं -"लेकिन मैं थोड़े पुराने हुए ही दूँगी... मीनू को तो नये चाहिए... फिर???

सरिता -"नहीं... नहीं... उसको मैं समझा दूँगी... परी के ही कपड़े हैं, ये नहीं बताऊंगी बस... वैसे भी हम उतरन को भी नया मानकर पहनते हैं और अपने शौक पूरे कर ही लेते हैं।"

एहसास...

शकुंतला अग्रवाल 'शकुन'
भीलवाड़ा

प्रवीण की आवारगी दिनों-दिन बढ़ती देख कर, आज नितेश ने बेटे से कहा...।

"तुमको होश है, तुम क्या कर रहे हो? लड़कियों के साथ घूमना, शराब पीना यह सब छोड़ कमाने पर ध्यान दो।"

"मेरे पीछे क्यों पड़े हो? मेरी गलतियाँ देखने से पहले, तनिक खुद को भी देख लिया लीजिए।" प्रवीण चिल्लाया।

"मुझे अपनी गलतियों का एहसास है, तभी तुमको कह रहा हूँ, लेकिन जब तुम्हें पता है, तुम गलत कर रहे हो, तो फिर अपना जीवन बर्बाद क्यों कर रहे हो, बेटा?" नितेश आत्मग्लानि से बोले।

"मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिए, और अपना ध्यान रखिए।"

बेटे का जवाब सुनकर, कनिष्का के अंदर का दर्द लावा बनकर बहने लगा। कनिष्का की मनोदशा देखकर नितेश बोले...।

"कनिष्का! सब ठीक हो जाएगा, भगवान पर विश्वास रखो, चलो घूमने चलते है, जीवन की नई शुरुआत करते है।"

प्रेम की ज़रा सी बौछार से, मुर्झाये पौधे पर नई कोंपले फूटने लगी।

कुछ रिश्ते

राकेश कुमार

प्रिय...

क्या हम दोनों इस विषय पर कभी एकमत नहीं हो सकते कि मैं तुम्हें उम्र भर प्रेम करता हुआ अपने जीवन को शनैः-शनैः अवसान की ओर ले चलूं और तुम मेरे भीतर के एहसासों की दरिया को बहने के लिए अपनी पाषाण प्रस्तर सतह पर एक छोटा-सा कोना दे सको।

तुमने मुझे मित्रता का प्रस्ताव दिया था। यह स्वीकारना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय होता लेकिन मेरे अहसासों को मैं खुदकशी के लिए प्रेरित करने का अपराधी तो नहीं हो सकता... मैं अपने पलकों को विधुरता का अभिशाप नहीं दे सकता, मैं नहीं देख सकता अपने लफ्जों को असमय काल के गाल में समाते हुए... तुम शायद मुझे समझने की कोशिश कर सको।

कुछ रिश्ते खून के नहीं होते, प्रेम के धागों से बंधे हुए भी नहीं होते फिर भी उसके खैरियत की खबर जानने मन बेचैन हो उठता है। अपने ही देहरी पर तुम्हें कुछ दिन लफ़्ज़ों की शक्ल में ना देखूं तो जाने कई आशंकाओं से मन घिर जाता है।

चलो! कम से कम इस बात पर हम दोनों सहमत हो जाते हैं कि मै इस अनाम रिश्ते को कभी प्रेम का नाम नहीं दूंगा और तुम इसे कभी दोस्ती का नाम मत देना। हम दोनों मौन संवेदनाओं के सूत्र से बंधे हुए ख्वाबों में मिला करेंगे और मिलकर सृजन को जन्म देंगे और उस नव-सृजित शिशु का नाम रखेंगे प्रेम...!

तुम अपना ख्याल रखना...

तुम्हारा

राकेश कुमार

गुलकंद मिल्क शेक

माधुरी डालमिया
हैदराबाद

- एक गिलास दूध
- 2 टीस्पून गुलकंद
- 1 टीस्पून रोज सिरप अगर है तो नहीं तो दो बूंद रोज एसेंस।
- शुगर स्वाद अनुसार।
- बर्फ के टुकड़े अपनी इच्छा अनुसार
- सारी सामग्री जूसर में डाल के अच्छे से चला दे
- आपका गुलकंद मिल्क शेक रेडी है।

चीज टोस्ट

सामग्री :

- ब्रेड - 4 - 5
- दही - 1 कप
- चीज - ग्रेट किया गया
- काली मिर्च 1/2 छोटी चम्मच
- नमक स्वादानुसार
- धनिया पत्ती बारीक कटी हुई
- प्याज बारीक कटी हुई
- बारीक भुजिया

सपना शर्मा

विधि :

- एक कटोरे में बारीक कटी हुई प्याज, चीज, धनिया पत्ती, नमक, काली मिर्च पाउडर, दही सभी को मिला ले और बार्टर बना ले.
- ब्रेड को दो-दो भाग मे काट ले और तल लें। तली हुई ब्रेड पर जो हमने मिश्रण तैयार किया है उसे फैला दे, फिर उसके ऊपर बारीक भुजिया बुरक देंऔर टोमेटो सॉस से सजा कर सर्व करें यह चीज टोस्ट बहुत टेस्टी और हेल्थ के लिए अच्छा होता है।

सुनो...

स्मिता पाण्डेय
निललोहित

मैं नहीं होना चाहती, उस प्राचीर की ईंट...
जिस पर हथौड़े से, ठक-ठक की दर्द भरी,
आवाज के साथ यूँ...
उभारी जायें कुछ प्रेम की पंक्तियाँ।

हाँ, वही पंक्तियाँ... जिन्हें कुछ पल के लिए,
बस देखा, सुना और पढ़ा जाये...
और उस प्राचीर से आगे निकलतें ही...
मैं उन पंक्तियों में अधूरी होकर,
सिमट कर रह जाऊँ हमेशा के लिए!!!

नहीं, मुझे नहीं पसंद, ये अधूरापन...
मुझे प्रेम में उस समर्पण की पराकाष्ठा तक पहुँचना है...

जहाँ मैं तुम्हारे आँगन की मिट्टी हो जाऊं...
और अभिसिंचित होती रहूँ...
तुम्हारे चरणों के स्पर्श से,
जो तुम सँग लिपट कर एक अलग सौंधी
सुगन्ध से पवित्र करेगी तुम्हारे गृह को!!!

नहीं होना चाहतीं मैं...
किसी जँगली पादप की टहनियां,
नहीं होना चाहतीं मैं पुष्प पारिजात...
जिसको पाने की प्रबल इच्छा सभी में हो!!!

नहीं होना मुझे वो पुष्प सुगंधित,
जो किसी भी शीश की शोभा बने...
मुझे बनना है हार धतूरा,
जो पूर्ण समर्पित हो मेरे निललोहित को
हाँ, तुम ही हो मेरे निललोहित
जिस पर मैं पूर्ण समर्पित हूँ!!!

"आदमी"

मुकुल गर्ग
पंचकूला (हरियाणा)

क्यूँ आदमी का दुश्मन बना है आदमी
क्यूँ अपराध के दलदल में सना है आदमी
क्या इंसानियत खत्म हो गयी है ज़मीं से
जो आदमी का प्यासा बना है आदमी।

कहाँ गए गीता पुराण
कहाँ गए बाईबल कुरान
कहाँ गए वो गौतम बुद्ध
जिन्होंने दिया उपदेश महान
क्यूँ बरबादी की राह पर चला है आदमी
क्यूँ आदमी का दुश्मन बना है आदमी।

कहाँ गया वो प्यार दिलों का
कहाँ गया ऐतबार दिलों का
कहाँ गयी वो पाक मोहब्बत
कहाँ गया अहसास दिलों का
क्यूँ प्रकाश को अंधियारा बना रहा है आदमी
क्यूँ आदमी का दुश्मन बना है आदमी
क्यूँ आदमी का दुश्मन बना है आदमी।

जन्मदिवस

आभा चौहान
कार्यकारी संपादक
26 अक्टूबर

बहन तुम्हारा जीवन
ऐसे सजाये यह जन्मदिवस
देखो हमारी आरज़ू
इतनी सी है बस
इतनी सी आरज़ू में शामिल
छोटी छोटी ढेरों ख़ुशी
स्वास्थ्य हो लाजवाब
बनो तुम रूपवती
मिले तुम्हे सबका प्यार
धन सम्पति मिले अपार
जीवन में छाई रहे सदा बहार ही बहार
खिल खिलाता हो तुम्हारा संसार
जब भी किसी की याद आये
नजर तुम्हें उस पल वो आ जाये
कभी कोई बुरा सपना भी
तुमको भूले से ना छू पाये इतना खास बन जाये
तुम्हारा यह जन्मदिवस
जैसे बने हर आने वाला दिवस खास
बस इतनी सी आरज़ू
रब से करते हैं हम आज

दीपक शर्मा
डिज़ाइनर हैड
22 अक्टूबर

जन्मदिवस पर मिले उपहार
आज तुम्हारे जन्मदिवस पर
मिले तुमको यह उपहार
खुशियाँ तुम्हारी दुगनी हो
ऐश्वर्य मिले अपार
आने वाली हर घड़ियाँ
लाये भविष्य सुनहरा
ना आये कोई बाधा
ना मिले दुःख कभी गहरा
उजियारी हो अमावस रात
हर दिन हो वसंत जैसा
मिले सदा अपनों का साथ
तुम्हे तुम्हारे सपनों का
हर संभव मुकाम मिले
तुम्हारे इस जन्मदिवस पर
प्रभु से करे हम इतनी सी विनती
मिले तुम्हे इतने उपहार
कि कर ना पाओ गिनती
Happy Birthday Dear

मेरी निहारिका परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

सुनो दुर्गावती...

"हमने कभी कोई वादा नहीं किया कोई कसमे नहीं खाई एक दूसरे को किसी बंधन में नहीं बांधा। बांधने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई कभी। लेकिन आज इतने सालों बाद तुम्हारी कमी-सी है क्यों महसूस हो रही है मेरे अंदर। जानती हो दुर्गावती...

मनोज सिंह
इलाहाबाद उत्तर प्रदेश

हैरान हो गई क्या? कि आज इस नाम से क्यों पुकारा। सुनो मैं कभी कह नहीं पाया लेकिन यह नाम सुनकर तुम तुनककर जब पैर पटकती थी तो मेरे मन में हलचल मच जाती थी।

जानती हो घर बना लिया है मैंने और तुमने जो वह बड़ी वाली खिड़की की बात की थी, वह भी बनवा ली है। वहां से गंगा दिखती है और जानती हो रात में उसकी लहरों की आवाज कैसी लगती है जैसे पानी पर पड़ रही चांदनी आसपास के रेत से टकराकर कोई खूबसूरत धुन पैदा कर रही है और मैं सारी सारी रात उस खिड़की पर बैठे हुए तुम्हें याद करते करते बिता देता हूं। ऐसा लगता है जैसे कि तुम्हारा नाम मेरी उंगलियों पर आकर ठहर गया।

दुर्गावती हम नादान थे या सिरफिरे। शायद दोनों... शायद प्यार समझदारों का खेल है ही नहीं। जरा-सा बेवकूफ होना प्रेमी होने की पहली शर्त है और हम हर बार खरे उतरे थे ना इस शर्त पर दुर्गावती...

मैं एक अंतर्मुखी सीधा साधा शर्मीला लड़का और तुम... तुम दुर्गावती... जैसे मेरे पीछे छेनी हथौड़ी लेकर पड़ गई थी जैसे मेरे बनाए कायदे कानून और नियमों के दीवार को तोड़ कर ही दम लोगी। और तुम्हारा यह भोलापन भा गया मुझको।

आज सोचता हूं तो लगता है कैसा पागलपन था ना वो जब मैं कहीं बाहर जाता तो तुम्हें एक लाख हिदायते देते जाता जैसे तुम मेरी पत्नी हो... सुनो दुर्गावती... घर में सारा सामान है बाहर मत जाना, अपना ख्याल रखना, बच्चों का ध्यान रखना, कोई अजनबी आए तो दरवाजा ना खोलना, रात में जल्दी सो जाना, कोई भी जरूरत हो तो मुझे फोन कर देना और हां मुझे ज्यादा मिस मत करना। और तुम कहती सुनते हो "चुनमुनिया" के बाऊजी "चुनमुनिया" तुमको बहुत याद करती है, चाचू ने उसे टॉफी न दिया तो रो रही थी पूछ रही थी बाऊजी कब आएंगे अम्मा।

कुछ पल के लिए लगता जैसे सब सच है। तुम अभी दौड़ कर आओगी और मुझसे लिपट जाओगी। लेकिन अगले ही पल में खुद को वही खिड़की पर पाता हूं। वो देखो दुर्गावती... टूटता तारा और वह देखो बादलों से बनता कोई जानवर। तुम यहां होती तो मेरा हाथ पकड़ कर कहते कोई जानवर बानवर नहीं है तुम्हारी शक्ल बनी हुई हैं फिर मैं झूठमूठ रूठ जाता तुम मुझे मना लेती। मना लेती ना दुर्गावती... यह ख्वाबों की दुनिया बिल्कुल वह ड्राइंग वाली पेपर की तरह होती है जिसमें अलग-अलग रंग भरने से सरहदें एक हो जाती है, दिन रात एक हो जाते हैं। जैसा हमारे साथ हुआ।

तुम पूछोगी दुर्गावती... कि कौन-सा उपन्यास पढ़ रहा हूं आजकल कि ऐसी बातें कर रहा हूं तो सुनो जिंदगी पढ़ रहा हूं आज कल। जब तक तुम थी तब तक किसी और रिश्ते की जरूरत महसूस ही नहीं हुई कभी, लेकिन जब से तुम गई हो कभी लगता है तुम साथ हो कहीं नहीं गई हो और कभी लगता है कि तुम हो कहां कहीं भी तो नहीं हो।

हमने कभी कोई वादा नहीं किया कोई कसमे नहीं खाई एक दूसरे को किसी बंधन में नहीं बांधा। बांधने की जरूरत ही महसूस नहीं हुई कभी। लेकिन आज इतने सालों बाद तुम्हारी कमी-सी है क्यों महसूस हो रही है मेरे अंदर। जानती हो दुर्गावती... ऐसा लगता है कि आजकल चाँद यहाँ आने की बजाय कहीं और से मुड़ जाता है। सुबह धूप भी खिड़की के बगल से होकर गुजर जाती है भीतर नहीं आती। ऐसा लग रहा है मानो कब से सीलन में रह रहा हूं मैं। जैसे मेरी जिंदगी को आज भी तुम्हारा इंतजार हो। कि तुम आओगी और तुम्हारी मुस्कुराहट से मेरी जिंदगी मैं प्रकाश ही प्रकाश फैल जाएगा।

आज फिर मैं इस खिड़की पर बैठा, तुम्हारे साथ बिताए वक्त को याद कर रहा हूं। तुम्हारे साथ बिताए वक्त में तुमने मुझे जिंदगी के कई रूप दिखाएं दुर्गावती... मेरी सोच को नए आयाम दिए, मेरी एकसार जिंदगी में नए रंग भरे।

सुनो दुर्गावती... शायद हम कभी ना मिल सकें लेकिन सुनो दुर्गावती... तुम थी, तुम हो और तुम हमेशा मेरी यादों में रहोगी दुर्गावती।

तुम्हारा "मनु"

अनुत्तरित प्रश्न

सोमेंद्र मिश्रा 'सौम्य'
प्रतापगढ़, उत्तरप्रदेश

> सौम्य कह नही पाता क्योंकि वह परी को खोना नही चाहता, मगर जाते समय परी की वो अश्रुपूरित आँखें आज भी उसके लिए एक "निरुत्तरित प्रश्न" है

सौम्य साहित्य प्रेमी था और परी प्रख्यात कवयित्री। परी की रचनाओं के अशआर इतने जीवंत होते थे कि पढ़ने वाले स्वतः उसके दीवाने हो जाते थे, हर रचना में वे खुद के लिए तकरार- मनुहार का अनुभव करते थे।

परी के हजारों प्रशंसकों में सौम्य भी एक था। आभासी दुनिया में सौम्य ने जब पहली बार परी को देखा था तो रूह काँप गई थी उसकी, रोंगटे खड़े हो गए थे... जैसे किसी सदियों के बिछड़े से उसका सामना हुआ था... बहुत रोया था उस दिन वो ईश्वर को कोसा भी था, कि उम्र के इस पड़ाव में परी उसे मिली भी तो हजार बंदिशों के साथ, जिम्मेदारियों से वो खुद भी सिर तक बंधा था, जमीन और आसमान-सी दूरियां थीं उनके दरमियाँ।

खैर कुछ दिन अवसाद में रहने के बाद सौम्य अपनी रचनाओं में उसे लिखने लगा और एक दिन वो भी आया जब सौम्य ने स्मृतियों में (अपनी रचना) परी को हूबहू उतार दिया, परी इस रचना को पढ़कर बहुत खुश हुई और जवाब में लिखा "बेहद शुक्रिया सौम्य"।

सौम्य को लगा जैसे परी ने उसे छू लिया हो, अब तो सौम्य अपने हर अशआरों में परी को लिखकर महसूस करने लगा।

बातें कमेंट से चैट तक पहुंच गईं,

एक दिन सौम्य ने डरते डरते परी से 'इश्क का इजहार' कर दिया...!

परी जोर से हंसी... तुम न बिल्कुल बुद्धू हो...! हजारों फालोवर्स हैं मेरे, सैकड़ों ने यही गलतफहमी पाल रखी है "तुमसे इश्क हुआ"...!

सुनो तुमने लिखा मुझे, विशिष्ट स्थान है तुम्हारा...!

नम्र निवेदन, अपना इश्क छुपाकर रखो, जाहिर मत करो, मैं इन सब में नही उलझना चाहती।

सौम्य पहले आहत हुआ फिर मुस्कुरा दिया, परी अब आदत बन चुकी थी उसकी।

स्वर्णिम दिन था आज, कवि गोष्ठी के बाद परी ने साथ काफी पीने का अनुरोध स्वीकार कर लिया था, काफी पीते सौम्य परी की आँखों में खुद को तलाशता रहा।

फिर दोनों उठे, सौम्य ने हाथ मिलाकर परी को रवाना किया, जाते-जाते अचानक परी ने पलटकर देखा, उसकी आँखें डबडबाई हुई थीं, सौम्य कुछ कह पाता तब तक गाड़ी चल चुकी थी, परी को लेकर...!

अगले दिन परी का फोन आया, तुम ठीक तो हो न...?

खाना खाया...?

इस बार सौम्य की आँखें भर आईं थीं, मुस्कुराते हुए बोला, जी बिल्कुल ठीक...

चल रहे हैं अब साथ साथ एक दूसरे को अपनी मुस्कुराहटों का संबल देते...!

नदी के दो जुदा-जुदा किनारे...!!

सौम्य कह नही पाता क्योंकि वह परी को खोना नही चाहता, मगर जाते समय परी की वो अश्रुपूरित आँखें आज भी उसके लिए एक "निरुत्तरित प्रश्न" है।

11 अक्टूबर को अमिताभ जी के जन्मदिन पर विशेष

बिग बी के साथ वे 28 दिन

जब भी मिलते हैं फुर्सत के चंद लम्हें,
अधखुली आंखों के सामने उभर आता है,
पुरानी यादों का कारवां।
”

राकेश कुमार शर्मा
प्रबंध संपादक
मेरी निहारिका

धुंधली होने के बाद भी उसकी हर तस्वीर हमें लुभाती है। सेंड क्लाक से गिरते रेत के मानिंद बहुत कुछ पीछे छूट जाता है, पर उसकी अनगिनत यादें हमारे दिलों दिमाग पर चस्पा हो जाती हैं। चाहें हम इसें नॉस्टलिज्म कहें या कोई और नाम दें, जो भी हो यह है बड़ी खूबसूरत चीज़। कई बार अतीत की खूबसूरत यादें हमारी बेहद पुरानी यादों को ताजा कर देती हैं। तीन दशक पहले की ऐसी ही एक याद आज मुझे फिर रोमांचित कर उठी, जब मैंने अपनी पुरानी एलबम में कुछ यादगार फोटो देखी। एक बारगी लगा यह सपना है या हकीकत। पर वह उस दौर की सच्चाई है। भले आज तीन दशक बाद में किसी को बोलूं कि मैं अपनी टीनेजर में 28 दिनों तक बिग बी के साथ रहा। हर दिन वह भी 12 घंटे। लोग मुझे मुंगेरीलाल ही कहते यदि आज मैंने उन पुराने पलों को कैमरे में कैद न किया होता। चलिये आज आप सभी से शेयर करते हुए उन पलों को एक बार फिर से जी लेता हूँ।

इंदिरा जी की हत्या के बाद लोक सभा के चुनाव में इलाहाबाद गंगापार क्षेत्र से विपक्ष के प्रत्याशी हेमवती नंदन बहुगुणा के सामने उस समय ऐसा कोई प्रत्याशी नहीं दिख रहा था, जो उन्हे हरा सकता हो। मेरी उन दिनों कुछ लिखने-पढ़ने की रुचि होती थी तो मैं शाम को अखबारों के दफ्तर में जाकर बेगार किया करता था। वहां भी यही चर्चा... कांग्रेस किसे बनाएगी प्रत्याशी? एक दिन मुझे अचानक सूचना मिली कि बिग बी... अमिताभ जी कल इलाहाबाद आएंगे और कांग्रेस के प्रत्याशी के तौर पर नामांकन दाखिल करेंगे। यह चर्चा चल ही रही थी कि मैंने उस अखबार के संपादक से कहा... “अमिताभ जी कल आ रहे हैं और वे कांग्रेस की ओर से पर्चा भरेंगे”। उस महफिल में बैठे लोग जोर से हंस दिए। उनमें से एक बोला..."ये शेखचिल्ली वाली बातें तो कर मत। जा घर जा”। मैंने जोर देकर कहा..” पुख्ता जानकारी है”। इस बात पर वहाँ बैठे एक दूसरे पत्रकार साथी ने इसे गंभीरता से लिया और इलाहाबाद के तमाम अफसरानों को फोन खटखटा दिए। हर ओर से एक ही बात... अफवाह है। अब तो मेरी

> जैसे ही अखबार के दरवाजे पर टकराने की आवाज आई मैं बाहर दौड़ा। अखबार उठाया तो हैडिंग थी... "छोरा गंगा किनारे वाला..."। दसों बार पढ़ गया उस खबर को और हर बार मुझे नया सुख मिलता। संपादक ने कहा कि "अब पूरा इलेक्शन तुम ही कवर करोगे"। इस तरह मुझे 28 दिन तक अमिताभ जी के साथ रहने का मौका मिला।

और हंसी उड़ी। मैं चुप। कुछ कह भी नहीं सकता। न वहाँ मेरी नौकरी थी और न मैं ही इस काबिल। पर मुझे जिस सोर्स से यह खबर मिली थी वह पुख्ता थी। कुछ देर बाद मैं उस अखबार के संपादक के पास गया। मैंने कहा... "खबर पुख्ता है। हमने इसे ब्रेक किया तो हम चर्चा में होंगे।" उन्होंने कहा..."लेकिन अगर गलत हुई तो हम मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे। तुम्हें जानता कौन है"। पता नहीं उन्हें क्या सूझी बोले.. "चल मान लिया, तेरी जानकारी पुख्ता है। पर वह है कौन सोर्स"? मैंने उनके कान में एक नाम फुसफुसाया तो उन्हें लगा शायद दम है। रात 12 बजने को थे। उन्होंने कहा कि..."एक बार मेरी बात करा दे। अगर मुझे लगा कि दम है तो डन"। मैंने उनके दफ़्तर से ही फोन मिलाया... दूसरी ओर से आवाज आई तो संपादक ने पूछा..." यह राकेश जो कह रहा है अमिताभ जी... "इतना कहते ही उधर से आवाज आई .."सही जानकारी है"। फोन कट। रात 12 बजे ये खबर बनाई गई। दूसरे दिन सुबह हर जबान पर एक ही चर्चा... आज का अखबार पढ़ा? हर कोई कहता.. पढ़ा तो। पर ऐसा है क्या? सुबह प्रशासन भी हड़कंप में। सूरज चढ़ते-चढ़ते इस खबर ने पूरे शहर भर में आग लगा दी। नामांकन स्थल पर पूरा शहर उमड़ चुका था। प्रशासन के लिए चुनौती। खैर अमिताभ जी आए और नामांकन भरने पहुंचे। मुझे उस दिन अखबार की खबर का महत्व समझ में आया। शाम को जिसे देखो वही मेरी तारीफ में जुटा था। खैर शाम को ही संपादक ने एक टीम गठित की जिसमें बहुगुणा जी के पूरे चुनाव कवरेज के लिए चीफ रिपोर्टर को लगाया गया और अमिताभ जी के कवरेज के लिए मेरा नाम। मैं तो सन्न रह गया। मुझे समझाया गया कैसे करना है। क्या-क्या करना है। जिस दिन अमिताभ जी का चुनाव प्रचार था, मुझे कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने सर्किट हाउस में सुबह-सुबह अमिताभ जी से मिलवाया। वहां जया जी और अमिताभ जी के छोटे भाई अजिताभ जी भी थे। इस तरह मैंने पहली बार बच्चन परिवार को अपने सामने देखा तो आंखों को यकीन नहीं था। यह था मेरा पहला दिन। सर्किट हाउस से मैं बाहर निकला तो देखा सैकड़ों की संख्या में युवक युवतियाँ अमिताभ जी की एक झलक पाने के लिए खड़े हैं। कुछ लड़कियों ने तो सड़कों पर दुपट्टे तक बिछा दिए थे। हम लोग एक कार में बैठे इंतजार करते रहे कि अमिताभ जी का यह काफिला कब आगे के लिए बढ़ेगा। नौ बज चुके थे। अचानक घोषणा हुई अमिताभ जी प्रचार के लिए निकल गए। भीड़ भागी और हमारी गाड़ी भी। शहर से यह काफ़िला यमुना पार कोरांव के लिए निकल चुका था। करीब एक घंटे बाद हम लोग उस जगह पहुंचे जहां अमिताभजी अपना पहला चुनावी भाषण देने वाले थे। माइक पकड़ते ही उनका पहला शब्द..."भाइयों और बहनों"। इतना सुनते ही तालियां ही तालियां। थोड़ी देर रुककर उन्होंने कहना शुरू किया। .."मैं आप सभी को भाई-बहन कहकर कोई रस्म अदायगी नहीं कर रहा"। फिर तालियां... । तालियां रुकी तो वे आगे बढ़े... दरअसल आप जिस मिट्टी में पैदा हुए, जिस मिट्टी में खेले और जहां पढ़े, मैं भी उसी मिट्टी में पैदा हुआ, वहीं खेलकर बड़ा हुआ। इस रिश्ते से आप सभी मेरे भाई-बहन होते हैं"। इतना बोलते ही तालियों का शोर। वे कह रहे थे" मैं न जाने कहाँ-कहाँ गया, हर जगह एक ही नाम से जाना जाता रहा। "छोरा गंगा किनारे वाला..."। तालियों पर तालियाँ। सभा खत्म होते ही फिर उनका काफिला जिधर निकलता उधर ही भीड़। पूरा दिन चुनावी भाषण के बाद शाम छह बजे लौटा तो संपादक ने पूछा.." कैसा रहा अमिताभ जी का पहला दिन। जो तुमने अहसास किया वही लिखना है"। मैंने लिखकर कॉपी एडिटर को दे दी और घर आ गया। रात भर परेशान... क्या होगा सुबह। खुशी के कारण नींद नहीं। चार बजे बाहर निकला तो पिताजी ने पूछा ... "क्या बात है"? मैं बोला.. अखबार... उनका जवाब था... "सो जा। छह बजे के पहले अखबार नहीं आता"। अंदर आया। जैसे ही अखबार के दरवाजे पर

“एक सप्ताह बाद संपादक ने मुझे बुलाया और कहा...” ये भाषण बाजी तो रोज एक जैसी ही है। आज मुझे अमिताभ जी का इंटरव्यू चाहिए। क्या पूछोगे, तुम जानो। मुझे कुछ पता नहीं”। मेरी तो सांस फूल गई। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा.. “मुझसे अच्छा करोगे... मुझे यकीन है”।

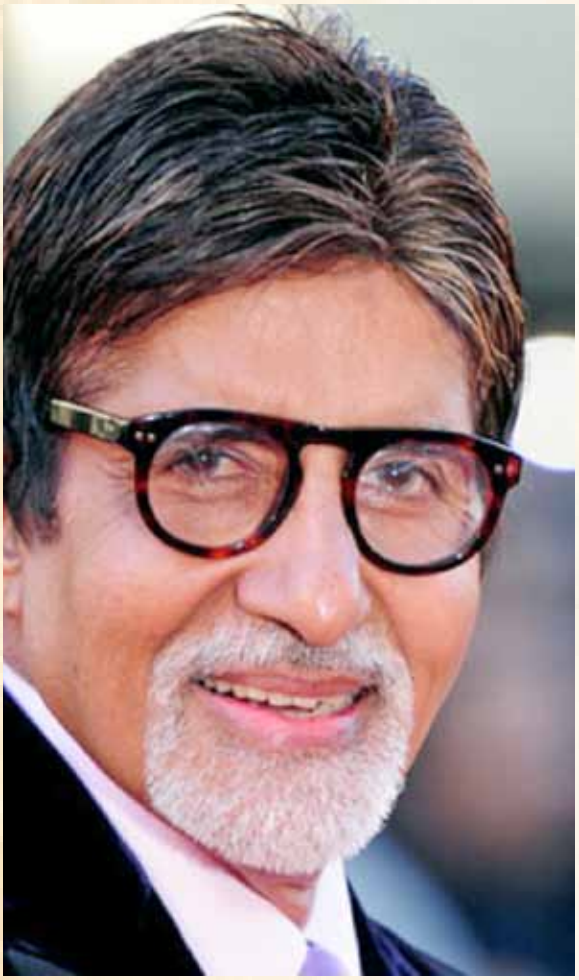

टकराने की आवाज आई मैं बाहर दौड़ा। अखबार उठाया तो हैडिंग थी... “छोरा गंगा किनारे वाला...”। दसों बार पढ़ गया उस खबर को और हर बार मुझे नया सुख मिलता। संपादक ने कहा कि “अब पूरा इलेक्शन तुम ही कवर करोगे”। इस तरह मुझे 28 दिन तक अमिताभ जी के साथ रहने का मौका मिला।

मेरा पहला इंटरव्यू...

एक सप्ताह बाद संपादक ने मुझे बुलाया और कहा..” ये भाषण बाजी तो रोज एक जैसी ही है। आज मुझे अमिताभ जी का इंटरव्यू चाहिए। क्या पूछोगे, तुम जानो। मुझे कुछ पता नहीं”। मेरी तो सांस फूल गई। उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखा.. “मुझसे अच्छा करोगे... मुझे यकीन है”। अब मेरे सामने दोहरी चुनौती। एक तो इंटरव्यू और दूसरा संपादक का यकीन। खैर मैं उस दिन अमिताभ जी की गाड़ी में ही बैठ गया और रास्ते में कह गया...” सर आज मुझे आपका इंटरव्यू करना है”। मेरी काया देखकर वे हंसे और बोले “ठीक है... दोपहर में कोरांव में बात करते हैं”। जैसे-जैसे समय बीतता गया मुझे घबराहट होती गई कि अगर नहीं हुआ तो...। दोपहर एक बजे हम लोग कोरांव गेस्ट हाउस पहुंचे। लंच का समय था। अमिताभ जी ने कहा... “अरे, उस बच्चे को बुलाओ क्या नाम है... राकेश... मुझे उससे बात करनी है”। मैं वहाँ पहुँचा तो वे अकेले बैठे थे... मुस्कराते हुए बोले...”आइए छोटे पत्रकार साहब... क्या जानना चाहते हैं मेरे बारे में? । मैं सकपका गया..। उन्होंने मुझे देखा और फिर मेरी डायरी की तरफ। बोले... “इसे तो खोलो”। मेरा पहला सवाल...”कुछ अपने बारे में बताएंगे सर...”। वे हंस दिए.. “इसी शहर से हूं। अमिताभ मेरा नाम है”। शायद वे मुझे सहज कराना चाह रहे थे। फिर उन्होंने ही बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ाया। बातचीत में उन्होंने मुझे इतना सहज कर दिया कि मेरा आखिरी सवाल सुनकर वे हंस दिये। मैंने कहा...” इस चुनाव में विपक्ष आपकी तो बहुत खिंचाई कर रहा है और आप कहीं कुछ नहीं बोलते उनके बारे में”। इतना सुनते ही उन्होंने कहा...”अब कोई कितना भी टांग खींचे, मैं इससे ज्यादा लंबा नहीं होने वाला”।

क्यों इतने हुए करीब कि हम...

दूसरे दिन इंटरव्यू छपा... शायद चुनावी दौर में यह अमिताभ जी का पहला इंटरव्यू था जो इलाहाबाद के किसी लोकल अखबार ने छापा... । मेरी तो लाइफ का पहला इंटरव्यू था ही। दूसरे दिन सुबह जब मैं फिर सर्किट हाउस में उनके कमरे में पहुंचा तो वे इंटरव्यू ही पढ़ रहे थे... मुस्कराए और बोले...” अच्छा लिखा है। कुछ कमियां है। सुधारो। अच्छे जर्नलिस्ट बनोगे। मैं भी इसी तरह फिल्म इंडस्ट्रीज में आया और मेहनत और लगन से इस मुकाम तक पहुंचा। ये ध्यान रखना, काम निष्ठा और ईमानदारी मांगता है। जितनी पार्दशिता रखोगे, उतने चमकोगे। काम आईना है और अपना आईना रोज ईमानदारी से साफ रखना”। इसके बाद से हम रोज साथ ही जाते और पूरे दिन साथ रहकर शाम को लौटते। ये सिलसिला पूरे चुनाव में चला। चुनाव के बाद वह इलाहाबाद आते तो मुलाकात होती और दस मिनट चर्चा होती, लेकिन उन्हें राजनीति रास नहीं आई और उन्होंने सांसद पद छोड़ दिया। मुझे एक सदमा सा लगा... । आज जब वह फोटो देखी तो एक लाइन याद आ गई।

लौट के सुकून मिल जाता है अतीत में। वर्तमान में तो अब सुकून की हवा झूमती नहीं... ।

राकेश कुमार शर्मा
प्रबंध संपादक
मेरी निहारिका

आहत मन

कौन समझेगा यहां
मेरा दर्द है क्या...

इंसान को सब मिल जाये
ये तो मुमकिन नहीं
अपना-अपना नसीब है
जो पहले से लिखा

कौन समझेगा यहां
मेरा दर्द है क्या...

कदमों से कहता रहा,
रुक जाओ कहीं...
मनमानी देखो इनकी,
इन्होंने भी ना सुना।

कौन समझेगा यहां
मेरा दर्द है क्या...

दोस्तों के दर्द का भी,
एहसास था मुझे...
जो साथ रहे हमेशा मेरे,
मेरे दर्द का इनको भी...
कभी पता ना चला।

कौन समझेगा यहां
मेरा दर्द है क्या...

चेहरे पे हँसी,
दर्द इसमे भी छुपा...
कौन समझेगा यहां
मेरा दर्द है क्या...

वर्षा रानी...

शिव मेहता
कानपुर

वर्षा रानी मेरे अंगना,
कितना शोर मचाती है।
टिप-टिप, टप-टप करती है ये,
मुझको बहुत लुभाती है।

मैं चाहूं बारिश में भीगूँ,
पर मम्मी डांट लगती है।
रामू की कागज की नैया,
इसमें गोते खाती है।

स्वीटी छाता लेकर नाचे,
बारिश में इतराती है।
सभी नाच गा-गाकर झूमें,
पर माँ मेरी आँख दिखाती है।

मम्मी नानी से कह दूंगा,
तुमको वो ये समझाए।
तुम भी तो बारिश में खेली थी,
फिर मुझ पर क्यों तू रोक लगाए।

अच्छी मम्मी, प्यारी मम्मी,
मुझ पर थोडी दया करो।
मुझको जाने दो बारिश में,
इतनी भी न निष्ठुर बनो।

चंदा मामा

देवेश गुप्ता
नई दिल्ली

चंदा मामा एक बात बताओ
क्यूँ छुपे-छुपे से फिरते हो,

ये धरती माँ तो है गोल-गोल
तुम क्यूँ झोल-मोल करते हो?

किसी दिन आधे किसी दिन पौने
कभी पूरे ग़ायब हो जाते हो।

मुझे भी सिखाना तरकीब तुम्हारी,
तुम कैसे छोटे-बडे हो जाते हो?

सच्ची-सच्ची बात बताना,
यूँ छुप-छुपकर तुम कहाँ घूमने जाते हो!

"गोल-मोल"

सुमन श्रीवास्तव
नलिनी

गोल- गोल है धरती माता,
गोल है सूरज चंदा ;
बच्चों की टोली है गोल-गोल,
तो गोल है बॉल यहाँ।
खाने में रोटी है गोल गोल तो,
मीले फल भी गोल ;
नन्हे- मुन्नों के चेहरे है गोल तो,
बातें भी उनकी गोल।
कक्षा में नम्बर लाना पूरे तुम,
कभी ना लाना गोल ;
अव्वल आना है कक्षा में तो,
तो करो पढाई खूब।
सेहत भी अच्छी रखनी है तो,
करना खूब व्यायाम ;
सीख यही है नन्हे मुन्नों को,
रहना सदैव नेक।
गोल- मोल है दुनिया सारी,
सीधी राह अपनाना ;
मंजिल अपनी पा जाओगे,
देश करेगा तब नाज़। ।

मेरी निहारिका
एक रिश्ता प्यार का
एक बंधन परिवार का

विजया डालमिया

संपादक
मेरी निहारिका
19 अक्टूबर

जन्मदिवस है आज आपका,
करें बधाई को स्वीकार
हमें मिठाई अभी चाहिये,

ये तो अपना है अधिकार
सदा लुटाते रहें सभी पर,
अपना निश्छल लाड़–दुलार,

पूछा उनसे तो बतलाया,
उमर हुई अब साठ साल
किंतु अभी भी युवा हृदय से,

देखो इनके रक्तिम गाल
धीरज की तो बात न पूछो,
अपना नाम करें साकार

पल भर में अपना कर लेते,
ऐसा इनका सद् व्यवहार
यही कामना हम करते हैं,

आप सदा रहिये खुशहाल
रहे सफलता कदम चूमती,
तन मन धन से मालामाल।

मेरी निहारिका परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

मेरी निहारिका

एक रिश्ता प्यार का
एक बंधन परिवार का

अगले माह ज्योतिपर्व दीपावली है।

मेरी निहारिका का अगला अंक दीपावली विशेषांक होगा।

पाठक अपनी रचनाएँ कविता कहानी संस्मरण 15 अक्टूबर तक editor@meriniharika.com पर भिजवा सकते है

दीपावली पर मेरी निहारिका ने रेसिपी प्रतियोगिता आयोजित की है। इसमे दीपवाली पर्व को ध्यान में रखकर बनाई गई 3 बेहतरीन रेसीपी के प्रतियोगी को 1100, 700 और 500 रुपए पुरस्कार दिया जायेगा। प्रतियोगिता की निर्णायक संपादक मंडल की टीम होगी।

प्रतियोगिता के लिए इंट्री 15 अक्टूबर तक मेल पर स्वीकार होंगे। विजेता प्रतियोगी की रेसेपी मेरी निहारिका में भी प्रकाशित की जायेगी।

मेरी निहारिका पत्रिका के लिए अपनी रचना

- editor@meriniharika.com
- abha@meriniharika.com
- meeta@meriniharika.com

पर अपनी फ़ोटो के साथ भेजें।

रचना किसी भी विधा में हो सकती है,
कविता, ग़ज़ल, कहानी, लेख इत्यादि और

9828423123 पर वाट्सएप करें

प्रबंध संपादक